

॥ श्रीश्रीगौरहरिर्जयति ॥

प्रकाशितग्रन्थसंख्या - १४४

साधककण्ठभूषण

प्रथमभाग

[ वैष्णववन्दना व परिचय ]



प्रकाशक :—

बाबाकृष्णदास

// कुसुमसरोवरवाले //

संवत् २०२४

न्योछावर - १० प.वे.

## ❀ साधक-कण्ठभूषण ❀

❀❀❀:०:❀:०:❀❀❀

बन्देऽहं श्रीगुरोः श्रीयुतपदकमलं श्रीगुरुन् वैष्णवांश्च  
श्रीरूपं साग्रजातं सहगणरघुनाथान्वितं तं सजीवम् ।  
माद्वैतं सावधूतं परिजनसहितं कृष्णचैतन्यदेवं  
श्रीराधाकृष्णपादान् सहगणललितान् श्रीविशाखान्वितांश्च ॥



### श्रीश्रीगुरुवन्दना—

आश्रय करिया बन्दों श्रीगुरुचरण ।  
याहा हृदये मिले आइ कृष्णप्रेमधन ॥ध्रु॥  
जीवेर निस्तार लागि नन्दसुत हरि ।  
भुवने प्रकाश हन गुरु-रूप धरि ॥  
महिमाय गुरु कृष्ण एक करि जान ।  
गुरु-आज्ञा हृदे सब सत्य करि मान ॥  
सत्य-ज्ञाने गुरु-वाक्ये याहार विश्वास ।  
अवश्य ताहार हय ब्रजभूमे वास ॥  
यार प्रति गुरुदेव हन परसन्न ।  
कोन विघ्ने सेह नाहि हय अवसन्न ॥  
कृष्ण रुष्ट ह'ले गुरु राखिवारे पारे ।  
गुरु रुष्ट ह'ले कृष्ण राखिवारे नारे ॥  
गुरु माता गुरु पिता गुरु हन पति ।  
गुरु विना ए-संसारे नाहि आर गति ॥  
गुरुके मनुष्य-ज्ञान ना कर कखन ।  
गुरु—निन्दा कभु कर्णे ना कर श्रवण ॥  
गुरु—निन्दुकेर मुख कभु ना हेरिबे ।  
यथा हय गुरु—निन्दा तथा ना याइबे ॥

गुरु विक्रिया यदि देखह कखन ।  
 तथापि अबज्ञा नाहि कर कदाचन ॥  
 गुरु-पादपद्मे रहे यार निष्ठाभक्ति ।  
 जगत तारिते सेइ धरे महाशक्ति ॥  
 हेन गुरु-पादपद्म करह बन्दना ।  
 याहा हैते घुचे भाइ सकल यन्त्रणा ॥  
 गुरु-पादपद्म नित्य ये करे बन्दन ।  
 शिरे धरि बान्द आमि ताँहार चरण ॥  
 श्रीगुरु-चरणपद्म हृदे करि आश ।  
 श्रीगुरु बन्दना करे सनातन दास ॥  
 इति श्रीलसनातनदासकृत “श्रीश्रीगुरुवन्दना” समाप्त



### सर्पाद-श्रीगौराङ्ग-वन्दना—

श्रीगुरु-चरण बन्दों गौराङ्ग निताइ ।  
 चरणे शरण देह अद्वैत गौसाजि ॥  
 गदाधर श्रीनिवास स्वरूप नरहरि ।  
 पिपाओ गौरा-प्रेमामृत मोरे कृपा करि ॥  
 दयार समुद्र गौर-प्रिय हरिदास ।  
 मोर पाप-चित्तो कर नामेर प्रकाश ॥  
 राची जगन्नाथ पद्मा हाडाइ पण्डित ।  
 अबोध-बालके दया एइ से उचित ॥  
 अनुग्रह करह कुवेर नाभादेवि ।  
 तुया पुत्र अद्वैत-चरण येन सेवि ॥  
 लक्ष्मी विष्णुप्रिया देवि ! निजगण सने ।  
 कृपा कर नदीया—विहार रहु मने ॥

बसुधा जाहवादेवि ! दया कर मोरे ।  
 तोमार निताइएर लीला स्फुरक आमारे ॥  
 दीने दया कर ओहे माधव-रत्नावती ।  
 तुया पुत्र गदाधर-पदे रहु मति ॥  
 माधवी मालिनी दमयन्ती देवी साता ।  
 तोमार बिना गौराङ्गेर के आछे रक्षिता ॥  
 बासुदेव सार्वभौम भट्टाचार्य ओहे ।  
 तोमार गौराङ्ग-गुणे मत्त कर मोहे ॥  
 दास गदाधर मोरे राखह चरणे ।  
 ना भुलिये श्रीगौराङ्ग जीवने मरणे ॥  
 गोविन्द गरुड कविचन्द्र काशीश्वर ।  
 मो अधमे कर निज—दासेर किङ्कर ॥  
 विश्वरूप श्रीयुत श्रीवीरचन्द्र प्रभु ।  
 देह पद—सेवा येन ना भुलिये कभु ॥  
 गौरीदास आचार्य नन्दन बनमाली ।  
 ए-दुःखीरे कर निज नाछेर काङ्गाली ॥  
 विद्यानिधि हलायुध श्रीरघुनन्दन ।  
 बारेक करह धनी दिया प्रेम—धन ॥  
 मुरारि गोविन्द ओहे मुकुन्द बासुघोष ।  
 चरणे धरिया बाल क्षम मोर दोष ॥  
 अनन्त ईश्वर ओहे माधवेन्द्र पुरी ।  
 राधाकृष्णप्रेमे मत्त कर कृपा करि ॥  
 केशव भारती कृपा कर एइबार ।  
 विश्वम्भरेर लीला येन ना छाड़िये आर ॥  
 बासुदेव दत्ता उद्धारण पुरन्दर ।  
 त्राण कर फुकारये ए दीन पामर ॥

दामोदर श्रीकर बल्लभ सनातन ।  
 निज-गुणे देह शुद्ध भक्ति-लक्षण ॥  
 ओहे गौर-प्रिय श्रीआचार्य सिंहेश्वर ।  
 घुचाओ कुबुद्धि होक् विशुद्ध अन्तर ॥  
 ओहे गोपीनाथ पट्टनायक एइवार ।  
 कृपा कर मो सम अधम नाहि आर ॥  
 भागवत माधव आचार्य दयामय ।  
 एइ कर प्रभुर चरित्रे मन रय ॥  
 गौरप्रिय—प्राण ओहे रूप सनातन ।  
 देह शक्ति करि प्रभुर चरित्र वर्णन ॥  
 श्रीजीव गोपाल—भट्ट दास—रघुनाथ ।  
 दन्ते तृण धरि कहि कर आत्मसात् ॥  
 चिरञ्जीव सुवाङ्म-मिश्र राघव कंसारि ।  
 कर ये उचित किछु बलिते ना पारि ॥  
 ओहे गौर—प्रिय शुन श्रीधर-ठाकुर ।  
 लाज त्यजि बलिये दुर्गति कर दूर ॥  
 श्रीवंशीबदन बक्रेश्वर शिवानन्द ।  
 दुःख घुचाइया देह बारेक आनन्द ॥  
 श्रीमधु—पाण्डित काशीमिश्र गङ्गादास ।  
 ओ पद भरसा मोर ना कर नैराश ॥  
 काशानाथ हरिभट्ट बसु—रामानन्द ।  
 दान देह श्रीगौरचन्द्रे पद—द्वन्द्व ॥  
 ओहे कवि—कर्णपूर बलिये तोमार ।  
 निरन्तर मग्न कर गौराङ्ग—लीलाय ॥  
 कमलाकर—पिपलाइ शुन हे महेश ।  
 मो पापीरे त्राणो यश घुपुक अशेष ॥

श्रीकान्त कमलाकान्त निवेदि निश्चय ।  
 वैष्णव-चरणामृते येन निष्ठा हय ॥  
 ओहे काङ्गुदाम उहा पुनः पुनः बलि ।  
 सन्वस्य होक् मोर वैष्णव-पद-धूलि ॥  
 ओहे कालिदास मोर एइ बड़ आश ।  
 वैष्णव-उच्छिष्टे येन बाढ़ये विश्वास ॥  
 श्रीजगदानन्द कीर्त्तनाया पष्ठावर ।  
 गौरगुण गाइ शक्ति देह निरन्तर ॥  
 प्रेममय श्रीमीनकेतन रामदास ।  
 नित्यानन्द-गुणे मार कराह उल्लास ॥  
 विजय-दास अनुपाम कर एइ मेन ।  
 गौर-पादपद्म मुञ्जि ना छाड़िये येन ॥  
 ओहे ब्रह्मानन्द श्रीपरमानन्द—पुरी ।  
 भक्ति-पथे सतत राखह चुले धरि ॥  
 जगाइ माधाइ दुइ भाइ दया कर ।  
 अनेक जन्मेर पाप क्षणेके संहार ॥  
 श्रीचन्द्रशेखर रघुपति उपाध्याय ।  
 एइ कर सुसिद्धान्त स्फुरुक हियाय ॥  
 ओहे शिखि माहिता एइ कर मोर हित ।  
 श्रीकृष्णचैतन्य जगन्नाथे रहु प्रीत ॥  
 श्रीनाथ तुलसी-मिश्र काला-कृष्णदास ।  
 मोरे उद्धारिया कर महिमा प्रकाश ॥  
 सारङ्ग सुन्दरानन्द गोविन्द उदार ।  
 संसार-यातना हते करह निस्तार ॥  
 ओहे रत्नबाहु भवानन्द धनञ्जय ।  
 कातरे करिले दया महिमा बाढ़य ॥

## सपार्षद-श्रीगौराङ्ग-बन्दना

ओहे वृन्दावन नारायणीर कुमार ।  
तोमरा थाकिते केन ए दशा आमार ॥  
उद्धारह यदुनाथ ठाकुर मुरारि ।  
बिषय-बिषेर ज्वाला सहिते ना पारि ॥  
ओहे प्रतापरुद्र राजा मिनति आमार ।  
काम क्रोध आदि दुष्टे करह संहार ॥  
शुन हे हिरण्य चिरञ्जीव नारायण ।  
नित्यानन्दाद्वैत-गौर-गुणे रहु मन ॥  
एइ कर बुद्धिमन्त-खान महाभति ।  
श्रीगौरसुन्दर मोर हौक प्राणपति ॥  
हृदयचैतन्य पूर्ण कर मार आश ।  
गौराङ्ग-गुण कहे ये, तार हृड दास ॥  
एइ कर भगवान् श्रीगर्भ श्रीनिधि ।  
गौराङ्गेर ब्रजलीला बुझि निरवधि ॥  
ओहे श्रीप्रबोधानन्द निवेदि तोमारे ।  
गौर-गुणेते बारेक माताह आमारे ॥  
जगदीश श्रीमान् सञ्जय सुदर्शन ।  
मोरे केन छाड़ हज्जा पतित-पावन ॥  
द्विज हरिदास जगन्नाथ बलराम ।  
जगत् उद्धार कर मोरे केन वाम ॥  
गौर-प्रिय दण्ड-अधिकारी हरिदास ।  
मोरे दण्ड करि अपराध कर नाश ॥  
ओहे अभिराम एइ कहिये तोमारे ।  
पापण्डी असुर हते रक्षा कर मोरे ॥  
ओहे रामानन्द राय रसेर सागर ।  
रसिक-भक्त-सङ्ग देह निरन्तर ॥

(१)  
(७)

## साधक-कण्ठभूषण

ओहे गौर-प्रिय श्रीगोविन्द भक्ति-राशि ।  
गौर-पादपद्म-सेवा देह दिवानिशि ॥  
गौर-पदे उपाधान ठाकुर शङ्कर ।  
गौर-आङ्ग-गन्धे मत्ता कर निरन्तर ॥  
प्रिय शुक्लाम्बर ओहे नदीया-निवासी ।  
मोरे घृणा कल्ले करिबे लोके हासि ॥  
निरवधि एइ कर ठाकुर लोचन ।  
गौराङ्ग-गुणेते येन डुबे मोर मन ॥  
ओहे उत्सवानन्द बलि भूमिते लुटायें ।  
देशे देशे फिरि येन गौर-गुण गेयें ॥  
श्रीपुरुषोत्तम रामदास देह एइ चाइ ।  
गौर-गुणे मत्ता हये नाचिये वेडाइ ॥  
ठाकुर मुकुन्द एइ करिते जुयाय ।  
गौर-कथा यथा तथा थाकि दीन-प्राय ॥  
ओहे श्रीपरमेश्वर दास देह एइ वर ।  
गौर-गुण शुनि येन कान्दि निरन्तर ॥  
अनन्त-आचार्य्य यदु-गाङ्गुली मङ्गल ।  
घुचाओ यतेक आमार आछे अमङ्गल ॥  
शिशु-कृष्णदास कृष्णदास-कविराज ।  
रक्षा कर एइवार करिनु दुष्ट-काज ॥  
ओहे श्रीनिवास नरोत्तम रामचन्द्र ।  
गण सह कर दया मुञ्जि अति मन्द ॥  
कि बलिव ओहे गौर-प्रिय परिवार ।  
नरहरि अनाथेर केह नाहि आर ॥  
आत्मनिवेदन एइ करि मुञ्जि स्तुति ।  
दिने दिने स्फुरे येन संप्रार्थना इति ॥

इति श्रीलनरहरि-दास-विरचितसपार्षद-श्रीगौराङ्ग-बन्दनासमाप्त ।



## श्रीश्रीवैष्णव-वन्दना ।



श्रीकृष्णचैतन्य-नित्यानन्दे ना जानिया ।  
निन्दनु वैष्णवगण मानुष धालिया ॥  
सेइ अपराधे मुनि व्याधिग्रस्त हैनु ।  
मने विचारिया एइ निरूपण कैनु ॥  
निमाइ करिल कत पातकी उद्धार ।  
परिणामे केन मोरे ना कैल निस्तार ॥  
नाटशाला हइते यवे आइसेन फिरिया ।  
शान्तिपुरे यान यवे भक्तगोष्ठी लैया ॥  
सेइ काले दन्ते तृण धरि दूर हैते ।  
निवेदिनु गौराङ्गेर चरण-पद्मेते ॥  
पतित पावन-अवतार नाम से तोमार ।  
जगाइ-माधाइ आदि करिले उद्धार ॥  
ताहा हैते कोटिगुणे अपराधी आमि ।  
अपराध क्षम प्रभु जगतेर स्वामी ॥  
प्रभु आज्ञा दिला, अपराध श्रीवासेर स्थाने ।  
अपराध हयेछे तोमार तार पड़ह चरणे ॥  
प्रभुर आज्ञाय श्रीवासेर चरणे पड़िनु ।  
श्रीवास-आगे से गौरेर आज्ञा समर्पिनु ॥  
अपराध क्षमिला से आज्ञा दिला मोरे ।  
पुरुषोत्तम-पदाश्रय कर गिया घरे ॥  
वैष्णव-निन्दने तोमार एतेक दुर्गति ।  
वैष्णव-वन्दना करि शुद्ध कर मति ॥

प्रभु-पादपद्म आमि मस्तके धरिया ।  
बादिल आरति चितो उल्लसित हिया ॥  
वैष्णव गंगामांजर नाम-उद्देश-कारण ।  
नाना क्षेत्र तीर्थ मुनि करिनु गमन ॥  
यथा यथा यार नाम शुनिनु श्रवणे ।  
यार यार पाद-पद्म देखिनु नयने ॥  
शास्त्रे वा याँहार नाम देखिनु शुनिनु ।  
सर्व भक्तेर नाम-माला ग्रन्थन करिनु ॥  
इथे अग्र पश्चात् मोर दोष ना लइवा ।  
ठाकुर वैष्णव मोर सकलि क्षमिवा ॥  
एक ब्रह्माण्डे हय चौह भुवन ।  
ताहाते वैष्णवगण करिया यतन ॥  
जातिर विचार नाइ वैष्णव-वर्णने ।  
देवता असुर ऋषि सकलि समाने ॥  
देवता गन्धर्व आदि मानुष आदि करि ।  
इहाते वैष्णव येइ तारे नमस्करि ॥  
पद्मपुराण आर श्रीभागवत-मत ।  
बन्दिब वैष्णव प्रभुर सम्प्रदायी यत ॥  
यत यत हीन जाति उद्धवे वैष्णव ।  
सवारे बन्दिब सवे जगत-दुर्लभ ॥  
श्रीकृष्णचैतन्य-नित्यानन्द कृपामय ।  
सर्व-अवतार-सर्वभक्तजनाश्रय ॥  
पुलिन्द पुष्कश भील किरात यवने ।  
आभीर कङ्क आदि करि सकलि समाने ॥  
सुभोग शबर म्लेच्छ आदि करि यत ।  
ब्रह्मा आदि चारि वेद सवार आराध्य ॥

### आभीर राग

प्राण गोराचाँद मोर धन गोराचाँद ।  
जगत बाँधिल गोरा पाति प्रेमकाँद ॥ध्रु॥  
मिनति करिया तृण धरिया दशने ।  
निवेदन करों गुरु-वैष्णव-चरणे ॥  
श्रीकृष्णचैतन्य—नित्यानन्द-अवतारे ।  
यतेक वैष्णव ताहा के कहिते पारे ॥  
वैष्णव जानिते नारे देवेर शक्ति ।  
मुनि कोन् छार हड शिशु अल्पमति ॥  
जिह्वार आरति आर मनेर बासना ।  
तेजि से करिते चाहों वैष्णव-बन्दना ॥  
ये किछु कहिये गुरु-वैष्णव प्रसादे ।  
क्रम भङ्ग ना लइवे मोर अपराधे ॥  
बन्दों शची जगन्नाथ मिश्र पुरन्दर !  
याँहार नन्दन विश्वरूप विश्वम्भर ॥  
बन्दना करिव विश्वरूप धन्य धन्य ।  
चैतन्य-अग्रज नाम श्रीशङ्करारण्य ॥  
बन्दिब से महाप्रभु श्रीकृष्णचैतन्य ।  
पतितपावन अवतार धन्य धन्य ॥  
बन्दों लक्ष्मी ठाकुरानी आर विष्णुप्रिया ।  
गदाधर पण्डित गोसाळि बन्दना करिया ॥  
बन्दों पद्मावती देवी हाडाइ पण्डित ।  
याँर पुत्र नित्यानन्द अद्भुत-चरित ॥  
दयार ठाकुर बन्दों प्रभु नित्यानन्द ।  
याँहा हैते नाटे गीते सवार आनन्द ॥

वसुधा जान्हवा बन्दों दुइ ठाकुरानी ॥  
याँर पुत्र वीरभद्र जगते वाखानि ॥  
वीरभद्र गोसाळि बन्दिब सावधाने ।  
सकल भुवन बश याँर आचरणे ॥  
जान्हवार प्रिय बन्दों रामाइ गोमाळि ।  
ये आनिल गोडदेशे कानाइ बलाइ ॥  
यैछे वीरभद्र जानि तैछे श्रीरामाइ ।  
जान्हवा मातार आज्ञा इथे आन नाइ ॥  
श्रीगोपीजनबल्लभ बन्दिब यतने ।  
अद्भुत चरित्र याँर ना याय बरणे ॥  
गोसाळि श्रीरामचन्द्र बन्दिब सादरे ।  
जीव उद्धारिते यिहँ बहु गुण धरे ॥  
गोसाळि श्रीरामकृष्ण बन्दों एकमने ।  
याँहार अशेष गुण जगते वाखाने ॥  
नित्यानन्द-सुता बन्दों गङ्गा ठाकुराणी ।  
भुवन भरिया याँर सुयश वाखानि ॥  
दयार ठाकुर बन्दों यतेक वैष्णव ।  
याँदेर कृपाय पाइ श्रीराधामाधव ॥

### भाटियारी राग

धन्य अवतार गोरा न्यासि-चूड़ामणि ।  
एमन सुन्दर नाम कोथाओ ना शुनि ॥ध्रु॥  
सावधाने बन्दिब श्रीमाधवेन्द्रपुरी ।  
विष्णुभक्ति—पथेर प्रथम अवतरी ॥  
आचार्य्य-गोसाळि बन्दों अद्वैत ईश्वर ।  
ये आनिल महाप्रभु भुवन-भितर ॥

सीता ठाकुराणी बन्दों हज्जा एक मन ।  
 श्रीअच्युतानन्द बन्दों तौहार नन्दन ॥  
 बन्दिब श्रीश्रीनिवास ठाकुर पण्डित ।  
 नारद खेयाति यॉर भुवन-पूजित ॥  
 भक्ति करि बन्दिब मालिनी ठाकुराणी ।  
 श्रीमुखे गौराङ्ग यॉरे बलिला जननी ॥  
 श्रीनारायणी देवी बन्दिब माबधाने ।  
 आलबाटी प्रभु यॉरे बलिल-आपने ॥  
 हरिदास ठाकुर बन्दों विरक्त—प्रधान ।  
 द्रव्य दिया शिशुरे लओथाइला हरिनाम ॥  
 गोपीनाथ ठाकुर बन्दों जगत-बिख्यात  
 प्रभुर स्तुतिपाठे येइ ब्रह्मा साक्षात ॥  
 बन्दिब मुरारि गुप्त भक्तिशक्तिमन्त ।  
 पूर्व अवतारे यॉर नाम हनुमन्त ॥  
 श्रीचन्द्रशेखर बन्दों चन्द्र सुशीतल ।  
 आचार्यरत्न यॉर ख्याति निरमल ॥  
 गोविन्द गरुड बन्दों महिमा अपार ।  
 गौरपदे भक्तिद्वारे यॉर अधिकार ॥  
 बन्दिब अम्बष्ठ नाम श्रीमुकुन्द दत्त ।  
 गन्धर्व जिनिया यॉर गानेर महत्त्व ॥  
 वासुदेव दत्ता बन्दों बड़ शुद्धभावे ।  
 उत्कले यॉहारे प्रभु राखिला समीपे ॥  
 बन्दों महा निरीह पण्डित दामोदर ।  
 पीताम्बर बन्दों तॉर ज्येष्ठ सहोदर ॥  
 बन्दों श्रीजगन्नाथ शङ्कर नारायण ।  
 बड़ उदासीन एइ भाइ पञ्चजन ॥

बन्दों महाशय चक्रवर्त्ति नीलाम्बर ।  
 प्रभुर भविष्य यह कहिला सत्वर ।  
 श्रीराम पण्डित बन्दों गुप्त नारायण ।  
 बन्दों गुरु विष्णु गङ्गादास सुदर्शन ॥  
 बन्दों सदाशिव आर श्रीगर्भ श्रीनिधि ।  
 बुद्धिमन्त खान बन्दों आर विद्यानिधि ॥  
 बन्दिब धार्मिक ब्रह्मचारी शुक्लाम्बर ।  
 प्रभु यॉरे दिल निज प्रेमभक्ति घर ॥  
 नन्दन आचार्य बन्दों लेखक विजय ।  
 बन्दों रामदास काव्यचन्द्र महाशय ॥  
 बन्दों खोलावेचा-ख्याति पण्डित श्रीधर ।  
 प्रभु-सङ्गे यॉर नित्य कौतुक कोन्दल ॥  
 बन्दों भिक्षु बनमाली पुत्रे सहिते ।  
 प्रभुर प्रकाश ये देखिला आचम्बिते ॥  
 इलायुध ठाकुर बन्दों करिया आदर ।  
 बन्दना करिव श्रीवासुदेव भादर ॥  
 बन्दिब ईशानदाम करयोड़ करि ।  
 शची ठाकुरानी यॉरे स्नेह कैल बड़ि ॥  
 बन्दों जगदीश आर श्रीमान् सञ्जय ।  
 गरुड काशीश्वर बन्दों करिया विनय ॥  
 बन्दना करिव गङ्गादास कृष्णानन्द ।  
 श्रीराय मुकुन्द बन्दों करिया आनन्द ॥  
 बल्लभ आचार्य बन्दों जगजने जानि ।  
 यॉर कन्या आपनि श्रीलक्ष्मी ठाकुरानी ॥  
 सनातन मिश्र बन्दों आनन्दित हैया ।  
 यॉर कन्या धन्या ठाकुरानी विष्णुप्रिया ॥



आचार्य्य बनमाली बन्दों द्विज काशीनाथ ।  
प्रभुर बिवाहे यिँह घटक साक्षात् ॥  
प्रभुर बिवाहोत्सवे छिल यत जन ।  
ताँ सवार पादपद्म बन्दि सर्वज्ञ ॥

### सुहृद् राग—

भाल अवतार श्रीगोराङ्ग अवतार ।  
ऐसन करुणानिधि कभु नाहि आर ॥ध्रु॥  
गोसाबि ईश्वरपुरी बन्दों सावधाने ।  
लोकशिक्षादीक्षा प्रभु कैल यँर स्थाने ॥  
केशव भारती बन्दों सान्दीपनी मुनि ।  
प्रभु यँरे न्यासी गुरु करिला आपनि ॥  
बन्दिब श्रीरामचन्द्र—पुरीर चरण ।  
प्रभु यँरे कहिलेन श्रीरामेर गण ॥  
परमानन्दपुरी बन्दों उद्धव-स्वभाव ।  
दामोदरपुरी बन्दों सत्यभामार भाव ॥  
नरसिंहतार्थ बन्दों पुरी सुखानन्द ।  
श्रीगोविन्दपुरी बन्दों पुरी ब्रह्मानन्द ॥  
नृसिंहपुरी बन्दों सत्यानन्द भारती ।  
बन्दिब गरुड अवधूत महामति ॥  
विष्णुपुरी गोसाबि बन्दों करिया यतन ।  
विष्णुभक्तिरत्नावली यँहार ग्रन्थन ॥  
ब्रह्मानन्दस्वरूप बन्दों बड़ भक्ति करि ।  
कृष्णानन्दपुरी बन्दों श्रीराघवपुरी ॥  
विश्वेश्वरानन्द बन्दों विश्वपरकाश ।  
महाप्रभुर पदे यँर विशेष विश्वास ॥

श्रीकेशवपुरी बन्दों अनुभवानन्द ।  
बन्दिब भारती-शिष्य नाम चिदानन्द ॥  
श्रीवंशीवदन बन्दों युडि दुइ कर ।  
यँरे वंशी-अवतार कैला गदाधर ॥  
गौराङ्गेर प्राणसम श्रीवंशीवदन ।  
यँहार शरणे मिले चैतन्य-चरण ॥  
बन्दों रूप सनातन दुइ महाशय ।  
वृन्दावनभूमि दुहेँ करिला निर्णय ॥  
श्रीजीव गोसाबि बन्दों सवार सम्मत ।  
सिद्धान्त करिया ये राखिल भक्तितत्त्व ॥  
रघुनाथदास बन्दों राधाकुण्डवासी ।  
राघव गोसाबि बन्दों गोवर्द्धन-बिलासी ॥  
बन्दिब गोपालभट्ट वृन्दावन-माझे ।  
सनातन-रूप-सङ्गे सतत बिराजे ॥  
रघुनाथभट्ट बन्दों प्रभुर आज्ञाते ।  
वृन्दावने अध्यापक श्रीश्रीभागवते ॥  
काशीश्वर गोसाबि बन्दों हवा एकमति ।  
मथुरामण्डले यँर विशेष खेयाति ।  
शुद्ध सरस्वती बन्दों बड़ शुद्धमति ।  
प्रभुर चरणे यँर विशुद्ध भक्ति ॥  
प्रबोधानन्द गोसाबि बन्दिब यतने ।  
ये करिला महाप्रभुर गुणेर बरणे ॥  
लोकनाथ गोसाबि बन्दों भूगर्भ ठाकुर ।  
दीनहीन लागि यँर करुणा प्रचुर ॥  
जगदानन्द पण्डित बन्दों साक्षात् सरस्वती ।  
प्रभु यँरे करिलेन परम पिरीति ॥

महा-अनुभव बन्दों पण्डित राघव ।  
 पाणिहाटी ग्रामे यँर प्रकाश वैभव ॥  
 पुरन्दर पण्डित बन्दों अङ्गद-विक्रम ।  
 सपरिवारे लाङ्गूल यँर देखिला ब्राह्मण ॥  
 काशीमिश्र बन्दों प्रभु यँहार आश्रमे ।  
 बाणीनाथ पट्टनायक बन्दिब सम्भ्रमे ॥  
 श्रीप्रद्युम्नमिश्र बन्दों राय भवानन्द ।  
 कलानिधि सुधानिधि गोपीनाथ बन्दों ॥  
 राय रामानन्द बन्दों बड़ अधिकारी ।  
 प्रभु यँरे लभिला दुर्लभ ज्ञान करि ॥  
 बकेश्वर पण्डित बन्दों दिव्य-शरीर ।  
 अभ्यन्तरे कृष्णतेज गौराङ्ग बाहिर ॥  
 बन्दिब सुग्रीव-मिश्र श्रीगोविन्दानन्द ।  
 प्रभु लागि मानसिक यँर सेतुबन्ध ॥  
 सम्भ्रमे बन्दिब आर गदाधरदास ।  
 वृन्दावने अतिशय यँहार प्रकाश ॥  
 सदाशिव कविराज बन्दों एकमने ।  
 सकल वैष्णव बश यार प्रेमगुणे ॥  
 प्रेममय-तनु बन्दों सेन शिवानन्द ।  
 जाति प्राण धन यँर गोरापद-द्वन्द्व ॥  
 चैतन्यदास रामदास आर कर्णपूर ।  
 शिवानन्देरे तिन पुत्र बन्दिब प्रचुर ॥  
 बन्दिब मुकुन्द-दत्ता भावे शुद्धचित्त ।  
 मयूरेर पाखा देखि हड़ला मूर्च्छित ॥  
 प्रेमेर आलय बन्दों नरहरिदास ।  
 निरन्तर यँर चित्तो गौराङ्ग-बिलास ॥

मधुर-चरित्र बन्दों श्रीरघुनन्दन ।  
 आकृति प्रकृति यँर भुवन-मोहन ॥  
 सकल-महान्तप्रिय श्रीरघुनन्दन ।  
 निताइ दिलेन यँरे सुमाल्य चन्दन ॥  
 प्रेमसुखमय बन्दों कानाइ - ठाकुर ।  
 महाप्रभु दया यँरे कारिला प्रचुर ॥  
 रघुनाथदास बन्दों प्रेमसुधामय ।  
 यँहार चरित्रे सब लोक बश हय ॥  
 आचार्य पुरन्दर बन्दों पण्डित देवानन्द ।  
 गौर-प्रेममय बन्दों श्रीआचार्यचन्द्र ॥  
 आकाइ हाटेर बन्दों कृष्णदास - ठाकुर ।  
 परमानन्द - पण्डित बन्दों सतीर्थ प्रभुर ॥  
 गोविन्द - घोष - ठाकुर बन्दों सावधाने ।  
 यँर नाम सार्थक प्रभु करिला आपने ॥  
 बन्दिब साधव घोष प्रभुर प्रीतिस्थान ।  
 प्रभु यँरे करिला अभ्यङ्ग-स्वरदान ॥  
 श्रीबासुदेव - घोष बन्दिब सावधाने ।  
 गौरगुण विना येइ अन्य नाह जाने ॥  
 ठाकुर श्रीअभिराम बन्दिब सादरे ।  
 पोल-साङ्गेर काष्ठ येहो वंशी करे धरे ॥  
 सुन्दरानन्द ठाकुर बन्दिब बड़ आशे ।  
 फुटाल कदम्बफुल जम्बीरेर गाछे ॥  
 परमेश्वरदास ठाकुर बन्दों सावधाने ।  
 शृंगाले लओयान नाम संकीर्तन-स्थाने ॥  
 इष्टदेव बन्दों श्रीपुरुषोत्तम नाम ।  
 के कहिते पारे तँर गुण अनुषाम ॥

सर्वगुणहीन ये ताहारे दया करे ।  
 आपनार सहज-करुणाशक्ति-बले ॥  
 सप्तम बत्सरे यॉर श्रीकृष्ण-उन्माद ।  
 भुवनमोहन नृत्य शर्कात अगाध ॥  
 गौरीदास कीर्त्तनीयार केशेते धरिया ।  
 नित्यानन्द-स्तव कराइला शक्ति दिया ॥  
 गदाधरदास आर श्रीगोविन्द घोष ।  
 यॉहार प्रकाश देखि प्रभुर सन्तोष ॥  
 यॉर अष्टोत्तरशत घट गङ्गाजले ।  
 अभिषेक सर्वज्ञाता हन शिशुकाले ॥  
 करवीर मञ्जरी आछिल यॉर काने ।  
 पद्म-गन्ध हैल ताहा सवा विद्यमाने ॥  
 यॉर नामे स्निग्ध हय वैष्णव सकल ।  
 मूर्तिमन्त प्रेमसुख यॉर कलेवर ।  
 काला कृष्णदास बन्दों वड़ भक्ति करि ।  
 दिव्य उपवीत वस्त्र कृष्णतेजोधारी ॥  
 कमलाकर पिपलाई बन्दों भावविलासी ।  
 ये प्रभुरे बलिल लह वेत्र देह वाँशी ॥  
 रत्नाकरसुत बन्दों पुरुषोत्तम नाम ।  
 नदीया बसति यॉर दिव्य-तेजोधाम ॥  
 उद्धारण दत्त बन्दों हज्या सावहित ।  
 नित्यानन्द-मङ्गे वेडाइला सर्वतीर्थ ॥  
 गौरीदास पण्डित बन्दों प्रभुर आज्ञाकारी ।  
 आचार्य गोसांजरे निल उत्कल-नगरी ॥  
 पुरुषोत्तम पण्डित बन्दों विलासी सुजन ।  
 प्रभु यॉरे दिला आचार्य-गोसांजिर स्थान ॥

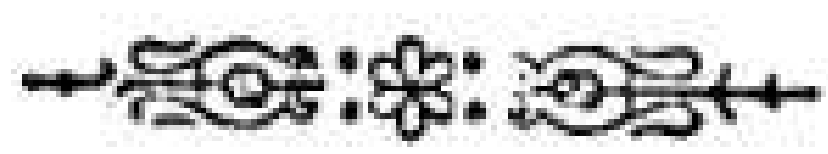
बन्दिब सारङ्ग दास हज्या एकमन ।  
 मकरध्वज - कर बन्दों प्रभुर गायन ॥  
 रुद्रारि कविगज बन्दों भागवताचार्य ।  
 श्रीमधु पण्डित बन्दों अनन्त आचार्य ॥  
 गोविन्द आचार्य बन्दों सर्वगुणशाली ।  
 ये करिल राधाकृष्णोर विचित्र धामाली ॥  
 सार्वभौम बन्दों बृहस्पतिर चरित्र ।  
 प्रभुर प्रकाशे यॉर अद्भुत कवित्व ॥  
 बन्दिब प्रतापरुद्र इन्द्रगुप्त-ख्याति ।  
 प्रकाशिला प्रभु यॉरे पङ्कज आकृति ॥  
 द्विज रघुनाथ बन्दों उड़िया विप्रदास ।  
 अभिन्न अच्युत बन्दों आचार्य श्यामदास ॥  
 द्विज हरिदास बन्दों वैद्य विष्णुदास ।  
 यॉर गीत शुनि प्रभुर अधिक उल्लास ॥  
 कानाइ खुटिया बन्दों विश्व-परचार ।  
 जगन्नाथ बलराम दुइ पुत्र यॉर ॥  
 बन्दों उड़िया बलराम दास महाशय ।  
 जगन्नाथ बलराम यॉर वश हय ॥  
 जगन्नाथ दास बन्दों सङ्गीत-पण्डित ।  
 यॉर गान-रसे जगन्नाथ विमोहित ॥  
 बन्दिब शिवानन्द पण्डित काशेश्वर ।  
 बन्दिब चन्दनेश्वर आर सिंहेश्वर ॥  
 बन्दिब सुबुद्धि-मिश्र मिश्र-श्रीश्रीनाथ ।  
 तुलसी-मिश्र बन्दों माहिती काशीनाथ ॥  
 श्रीहरिभट्ट बन्दों माहिती बलराम ।  
 बन्दों पट्टनायक साधव यॉर नाम ॥

वसुवंश रामानन्द बन्दिव यतने ।  
 यँर वंशे गौर विना अन्य नाहि जाने ॥  
 बन्दिव पुरुषोत्तम नाम ब्रह्मचारी ।  
 श्रीमधु पण्डित बन्दों बड़ अधिकारी ॥  
 श्रीकर पण्डित बन्दों द्विज रामचन्द्र ।  
 सर्व सुखमय बन्दों यदु कविचन्द्र ॥  
 विलासी वैरागी बन्दों पण्डित धनञ्जय ।  
 सर्वस्व प्रभुरे दिया भारण हाते लय ॥  
 जगन्नाथ पण्डित बन्दों आचार्य लक्ष्मण ।  
 श्रीकृष्ण पण्डित बन्दों बड़ शुद्धमन ॥  
 सूर्यदास पण्डित बन्दों विरुपाक्ष संसारे ।  
 वसुधा जाह्नवा दुइ कन्या यँर घरे ॥  
 मुरारि चैतन्यदास बन्दों सावधाने ।  
 आश्चर्य चरित्र यँर प्रह्लाद-समाने ॥  
 परमानन्द-गुप्त बन्दों सेन-जगन्नाथ ।  
 कविचन्द्र मुकुन्द बालक रमानाथ ॥  
 श्रीकंसारि सेन बन्दों सेन श्रीबल्लभ ।  
 भास्कर ठाकुर बन्दों विश्वकर्मा अनुभव ॥  
 सङ्गीत-रचक बन्दों बलराम दास ।  
 नित्यानन्दचन्द्रे यँर सुदृढ़ विश्वास ॥  
 महेश शण्डि बन्दों बड़ उन्मादी ।  
 जगदीश पण्डित बन्दों नृत्यविनोदी ॥  
 नारायणीसुत बन्दों वृन्दाबनदास ।  
 यँहार कवित्व गीत जगते प्रकाश ॥  
 बड़गाछिर बन्दिव ठाकुर कृष्णदास ।  
 प्रेमानन्द नित्यानन्दे यँहार विश्वास ॥

परमानन्द अवधौत बन्दों एकमने ।  
 सर्वदा उन्मत्ता सिंह बाह्य नाहि जाने ॥  
 बन्दिव से अनादि गङ्गादाम पण्डित ।  
 यदुनाथ दास बन्दों मधुर-चरित ॥  
 पुरुषोत्तमपुरी बन्दों तीर्थ-जगन्नाथ ।  
 श्रीराम-तीर्थ बन्दों पुरी रघुनाथ ॥  
 बासुदेव तीर्थ बन्दों आश्रमी उपेन्द्र ।  
 बन्दिव अनन्तपुरी हरिहरानन्द ॥  
 मुकुन्द कविराज बन्दों निर्मल-चरित ।  
 बन्दिव आनन्दमय श्रीजीव पण्डित ॥  
 बन्दना करिव शिशु कृष्णदाम नाम ।  
 प्रभुर पालने यँर दिव्य तेजोधाम ॥  
 माधव आचार्य बन्दों कवित्व शीतल ।  
 यँहार रचित गीत श्रीकृष्णमङ्गल ॥  
 गौरीदास पण्डितेर अनुज कृष्णादास ।  
 बन्दिव नृसिंह आर श्रीचैतन्यदास ॥  
 रघुनाथ भट्ट बन्दों करिया विश्वास ।  
 बन्दों दिव्य-लोचन श्रीरामचन्द्र दास ॥  
 श्रीशङ्कर बन्दों बड़ अकिञ्चन-रीति ।  
 डम्फेर बाद्येते ये प्रभुर कैल प्रीति ॥  
 प्रेमानन्दमय बन्दों आचार्य माधव ।  
 भक्तिवले हैला गङ्गादेवीर बल्लभ ॥  
 नारायण पैड़ारि बन्दों चक्रवर्ती शिवानन्द ।  
 बन्दना करिते वैष्णवेर नाहि अन्त ॥  
 एइ अबतारे यत अशेष वैष्णव ।  
 कहने ना याय सवार अनन्त वैभव ॥



अनन्त वैष्णवगण अनन्त महिमा ।  
हेन जन नाहि ये करिते पारे सीमा ॥  
वन्दना करिते मोर कत आछे बुद्धि ।  
वेदेह जानिते नारे वैष्णवेर शुद्धि ॥  
सवाकार उपदेष्टा वैष्णव ठाकुर ।  
श्रवण—नयन—मन—वचनेर दूर ॥  
शरण लइया भज वैष्णव—चरणे ।  
संक्षेपे कहिल किछु वैष्णव—वन्दने ॥  
वैष्णव—वन्दना पड़े शुने येइ जन ।  
अन्तरेर मल घुचे गुठ हय मन ॥  
प्रभाते उठिया पड़े वैष्णव—वन्दना ।  
कोन काले नाहि पाय कोनइ यन्त्रणा ॥  
देवेर दुर्लभ सेइ प्रेमभक्ति लभे ।  
देवकीनन्दन दास कहे एइ लोभे ॥  
इति श्रीश्रीवैष्णव-वन्दना समाप्ता ।



## श्रीभक्तनामावली

❀ श्रीराधानवगोविन्ददेवो जयतः ❀



दोहा—प्रनमहुँ नव गोविन्द नव राधा कुवरि अनूप ।  
नयद्वीप मवि नित्र लसेँ गोर गदाधर रूप ॥१॥  
नित्यानन्द चैतन्य वपु राम कृष्ण शशि सूर ।  
चुन्दावन अंतर सुवन लसेँ तिमिर करि दूर ॥२॥

सोरठा—जग मधि संत अनंत अंत न होइ अनन्त मुख ।  
को वरने बुधिवंत विन प्रसाद सियकंत के ॥३॥  
मूक होइ वाचाल गिरियन लांचै पंगु जहँ ।  
अस मम नाथ कृपाल सीतापति अद्वैतवर ॥४॥  
दुरगम सुगम सुहोय दुस्कर निकर सुकर जहँ ।  
अस मम प्रभु मद जोय दुर्घट घटन ममर्थ वर ॥५॥  
इनके पद चित लाइ मति अनुसार मुमंद मति ।  
रच्यौ चहतु भारि चाह हरिवल्लभ नामावली ॥६॥  
दोहा—नित्यानन्द चैतन्य के भ्राजहि अनगन संत ।  
अनुरागी सुठि अमल मति बड भार्गी रसवंत ॥७॥  
एक एक के चरित जिमि सुर सरिता सतधार ।  
कन परसत जाके नसेँ कलि कलमभ निरधार ॥८॥  
ताहू में पुन देखियतु कछु परगट वछु गूढ़ ।  
जिहि वरनत में होइ अति सुरगुरु की मति मूढ़ ॥९॥  
तिहि वरनन हित जास के बाढै चित महि चाह ।  
जिमि वालक अति सुग्धमति निरखि चंद ललचाइ ॥१०॥  
सुर प्रसाद अभ्यास सुठि अरु धितपति सुख साज ॥  
कारन काव्य सुकहत हैं जाहि सुमित कविराज ॥११॥  
सो संतानि के विगत मत जातेँ लौकिक रीति ।  
काज अलौकिक माँहि पुन कारण लोकातीति ॥१२॥  
हरि गुरु हरिजन तत्व सम मम परभाव सुतीन ।  
तिह वरनन महि होइ पुन जे प्रवीन रसलीन ॥१३॥  
हरि गुरु हरिवल्लभ कृपा कारन सुठि तहँ जोइ ।  
कारन लोकातीति विनु वरन फुरै नहि कोइ ॥१४॥  
हरिवल्लभ परसाद बल सुखद देवकीनन्द ।  
रची सु वैष्णववन्दना सरस सुरस सुखकंद ॥१५॥



ताकौ संतनिदेश पुन संतनि हित विन खेद ।  
 रचत भक्त नामावली ग्रन्थ जु भाषा भेद ॥१६॥  
 सोरठा-नमहुँ गौरवरचन्द नित्यानन्द आनन्द भरि ।  
 सम करुना रस कन्द पूरन परमानन्द वपु ॥१७॥  
 जे परिकर सुख रूप चारु अमित अवतार गत ।  
 तिन के सरन सरूप भ्राजहिँ परम अनूप जू ॥१८॥  
 दोहा-नमहुँ सची पुन मिश्रवर जगन्नाथ सुखकंद ।  
 विश्वरूप रमरूप अरु गौरचंद जिहिँ नंद ॥१९॥  
 अति अनन्य गति जाचि हैं विश्वरूप पद धन्य ।  
 अप्रज श्री चैतन्य सुभ नाम संकरानन्य ॥२०॥  
 नमहु कृष्णचैतन्य प्रभु करि विनती जु अपार ।  
 अगम निगम दुगेम प्रकट करुणालय अवतार ॥२१॥  
 लक्ष्मी पद रज जाचि हैं विष्णुप्रिया गुन गाइ ।  
 सुघर गदाघर पंडित हि सीस नाइ भरि भाइ ॥२२॥  
 पद्मावति पद वरनिहों द्विजवर बहुरि मुकुंद ।  
 जिहि सुत जगदानंद कर भ्राजत नित्यानंद ॥२३॥  
 प्रणम हुँ नित्यानंद प्रभु नित्यानन्द सरूप ।  
 पतितांत के गति रूप अति प्रगट प्रभाव अनूप ॥२४॥  
 प्रणम हुँ वसुधा जान्हवी वीरचन्द जिहि नन्द ।  
 वीरचंद पुन वरनि हों दुति अमंद रसकंद ॥२५॥  
 परमादर प्रणम हुँ पुरी माधवेंद्र रसरास ।  
 दुरी भक्ति भगवंत की जिन कीनी परकास ॥२६॥  
 श्री अद्वैत सुईस पद रज धरिहों निज सीस ।  
 जिन लायौ इहि जगत माहि गौर धाम जगदीस ॥२७॥  
 सिय चरननि सिर नाइ हों हूँ हरापित भरि भाइ ।  
 श्रीअच्युत पद पवज हि मन मधुकर सरसाइ ॥२८॥

श्री निवास पंडित नम हुँ श्री निवास प्रियदास ।  
 प्रेमरासि अति जाल को जिम नारद परकास ॥२९॥  
 हूँ पुलकित पुन वरनि हों मालिनि हरसित काय ।  
 हरपि हरपि जिहि गौरहरि कही मात सुत भाय ॥३०॥  
 सोरठा-प्रभु वसंत रसभोय जाहि आलवादी बंदत ।  
 बड़ भगिनी जग जोय नमहुँ नाम नारायणी ॥३१॥  
 उदासीन सिरमौर हरिवल्लभ हरिदास वर ।  
 रटत बाल हित कौर हरपि नाम हरिदेव जहँ ॥३२॥  
 दोहा-वरन हुँ गोपीनाथ पद नमित माथ भरि चाव ।  
 प्रभु अस्तुति माहि चतुरवर चतुरानन परभाव ॥३३॥  
 भक्ति सक्तिधारी नमहुँ गुप्त मुरारि प्रकास ।  
 हनूमान अनुमानिये रामचन्द्र पद दास ॥३४॥  
 वरनहुँ सेपर चंद पद चित चकोर सरसाय ।  
 श्री आचारज रत्न कौं हिय संपुट माहि लाय ॥३५॥  
 प्रनम हुँ श्रीगोविन्द वर वैनतेय परभाव ।  
 गौरधाम अभिराम पद प्रीति रीति अति चाव ॥३६॥  
 चाय भाय चित लाय पुन वरन हुँ दत्त मुकुन्द ।  
 गान कला गंधर्व जिमि सरस सुरस सुखकन्द ॥३७॥  
 घासुदेव हिय माहि लसक दरावंश कुलदीप ।  
 उत्कल माहि श्री गौरवर राखे चरन समीप ॥३८॥  
 दामोदर पण्डित नमहुँ वर पीतांबर संग ।  
 जगन्नाथ संकर बहुरि नारायण भरि रंग ॥३९॥  
 तजि असार संसार रति प्रभु चरननि मति सांच ।  
 उदासीन परवीन ए भ्राजहिँ भ्रात सुपांच ॥४०॥  
 श्री नीलांबर चक्रवै त्रिकालज्ञ सुख राम ।  
 हौंन हार प्रभु चरित लै जिन कीनौ परकास ॥४१॥

नमहुँ रामश्री गुप्तवर नारायण अभिराम ।  
 विष्णु गंग भरि रंग पुन दास सुदरसन नाम ॥४२॥  
 नमहुँ सदासिख श्रीगरभ श्रीनिधि अरु बुधिवंत ।  
 खान विदित रसखान पुन विद्यानिधि सुठि सत ॥४३॥  
 बहुरि ब्रह्मचारी नमहुँ शुक्लावर करि नेम ।  
 जिहि वर दीनो गौरवर प्रेमभक्ति भरि प्रेम ॥४४॥  
 नंदन आचारज नमहुँ लेखक विजै महंत ।  
 लिख लिख दीने हैं प्रभुहि अमित ग्रंथ रसवंत ॥४५॥  
 रामचंद कविचंद अरु श्रीधर जग परकास ।  
 जिहि प्रभु संग सुरंग भरि नाचत करि परिहास ॥४६॥  
 भिछुक वनमाली बहुरि गुनसाली तिहि नंद ।  
 प्रभु पर भाव सुचाव भरि जिन देख्यो सुख कंद ॥४७॥  
 नाम हलायुध धाम सुख नित वरन हूँ भरि भाय ।  
 वासुदेव भादर बहुरि आति आदर सरसाय ॥४८॥  
 सो-सानुराग जुरि पानि श्री ईसान वरनि हौं ।  
 सची दास निज जानि नेह रासि कीनी सुजाहि ॥४९॥  
 दोहा-सीस नाइ जगदीस पद श्रीमान हि सनमान ।  
 प्रनमहुँ कासीस्वर गरुड संजय जुरि जुग पान ॥५०॥  
 गोंगदास रसकंद अरु वरनहुँ कृष्णानंद ।  
 नित स्वछंद भति जाचिहौ पदरज राय मुकंद ॥५१॥  
 आचारज बल्लभ नमहुँ दुल्लभ जिनकी रीति ।  
 जिहि तनु जासुठि सिधुजा लोकरीति परतीति ॥५२॥  
 नमहुँ सनातन मिश्रवर नम वच आठौं जाम ।  
 जिहि कन्या धन्या विदित विष्णुप्रिया प्रिय नाम ॥५३॥  
 वनमाली आचारज रु कासोपति द्विजराज ।  
 प्रभु विवाह उत्साह महि घटकराज सुखसाज ॥५४॥

पुरीजु ईश्वर वरनि हौं प्रेमरीति भरि प्रीति ।  
 लीनी दिख्या गौरवर सिख्या लोक प्रतीति ॥५५॥  
 वरन हूँ कैसो भारती सांदीपन सुखरास ।  
 गुरु गौरव श्री गौरवर कीनो जाहि प्रकास ॥५६॥  
 पुरी रामचंद हि रटत घटत अवट हिय पीर ।  
 कहे गौरवर धीर जिहि नाहि न गन रघुवीर ॥५७॥  
 पुरी सुपरमानन्द सुठि ऊधो माधो मीत ।  
 पुरी जु दामोदर नमहुँ सतभाभा परतीति ॥५८॥  
 तीरथ वर नरसिख श्री ब्रह्मानन्द प्रवीन ।  
 सुखानन्द गोविंद पुनि वरन हूँ पुरी सुतीन ॥५९॥  
 सत्यानन्द सुभारती अरु नरसिंहानन्द ।  
 मति विसाल अबधूत वर गरुड नाम सुखकंद ॥६०॥  
 विष्णुपुरी पद वरनि हौं विष्णुभक्ति रसरूप ।  
 विष्णुभक्ति रतनावली जिहि उर लसत अनूप ॥६१॥  
 ब्रह्मानन्द स्वरूप अरु कृष्णानन्द अनूप ।  
 पुरी राघवानन्द पुन भक्त भूप रस रूप ॥६२॥  
 विश्व विदित गुन वरनिहौं विश्वेश्वर सुठि रीति ।  
 गौरधाम अभिराम पद प्रीति रीति परतीति ॥६३॥  
 पुरी जु केसो वरनि हौं विदित अनुभवानन्द ।  
 नमहुँ भारती सिष्यवर चिदानन्द रुखकन्द ॥६४॥  
 रूप सनातन वरनि हौं जानि सनातन रूप ।  
 भुमि प्रेम ब्रज-भूमि महि जिनकौ निलय अनूप ॥६५॥  
 बहुरि नमहुँ श्री जीवपद करि निहचै एकांत ।  
 भक्ति तत्व राखे सुकरि श्रुति सम्मत सिद्धान्त ॥६६॥  
 दास विदित रघुनाथ अरु राघो पद जिय आस ।  
 राधासर गिरिवर प्रगट नित जिहि वास विलास ॥६७॥

नमहुँ भट्टगोपाल पद अति उमंग भरि रंग ।  
 वृन्दावन मधि नित लसै रूप सनातन संग ॥६८॥  
 लोकनाथ पद वरनिहौं करि विनती निज माथ ।  
 प्रनम हुँ श्री भूगर्भ पुनि दीन जननि के नाथ ॥६९॥  
 गुन अनंत पुन वरनि हौं श्री कासीस्वर संत ।  
 मजमंडल महि जासके परचै रास अनंत ॥७०॥  
 बहुरि नमहुँ अति सुद्वमति सरस्वती सुठि सुद्ध ।  
 प्रभु चरननि महि जास कौ प्रगट प्रेम अबिरुद्ध ॥७१॥  
 नमहुँ प्रबोधानंद वर करि रति मति सुअनन्य ।  
 वरन्यो श्रीचैतन्य कौ विमल चरित अति धन्य ॥७२॥  
 प्रगट भट्ट रघुनाथ पद वरनहुँ हिय हरपाँहि ।  
 कथिया श्री भागौत कौ श्रीवृन्दावन माँहि ॥७३॥  
 वांती सुखदानी मनहु पण्डित जगदानंद ।  
 गौरकृपा को पर विदित प्रेम रास सुखकंद ॥७४॥  
 पनिहाटी वासी नमहुँ सेखरासी भरि चाव ।  
 पंडित राघो जानि अरु मानि अमित परभाव ॥७५॥  
 सो०-प्रवल बलीसुत बाल नमहुँ पुरन्दर पंडित हि ।  
 निरखत पृच्छ विमल लै निजगन द्विज चकित है ॥७६॥  
 दो०-मिश्र वंश परसंस महि कासी पद चित लाय ।  
 वरन हुँ वांतीनाथ पुन सुठि पट नाइक गाय ॥७७॥  
 अधिकारी भारी नमहुँ रामानंद सु राय ।  
 ज्ञानसु लीनो गौरवर दुर्लभ बल्लभ भाय ॥७८॥  
 पंडित वक्रेश्वर नमहुँ दिपत अलौकिक रूप ।  
 गौर स्याम दुधरथौ दुरथौ दुर्गम भेव अनूप ॥७९॥  
 नाय प्रीव सुप्रीव पद अरु गोविन्दानन्द ।  
 गौरचन्द्र हित मानसी रच्यौ सेतु सुखकन्द ॥८०॥

दास वंश नभ चन्द्रवर उदित गदाधर नाम ।  
 श्रीवृन्दावन धाम मधि जिहि विलास अभिराम ॥८१॥  
 सदा सदाशिव गायहौं सुठि कविराज प्रकाश ।  
 प्रेम पास महि जास के सुदृढ़ बंधे हरिदास ॥८२॥  
 प्रेम ऐन वर सैन श्रीसिवानंद पद जोय ।  
 कुल कांन रु धन प्रान जिहि गौरचंद पद दोय ॥८३॥  
 मो०-नाहिन देख्यो कोय प्रेमी परम मुकुन्द सम ।  
 गिरथौ मूरछित होय मोर पुच्छ लखि स्वच्छ मति ॥८४॥  
 दो०-प्रेम सुधारस रास बपु नम हुँ नरहरिदास ।  
 जिहि अन्तरनभ महि सदा गौर चंद परकास ॥८५॥  
 जग वंदन पद वरनि हौं रघुनन्दन भरिचाय ।  
 भक्त भूप सुठि रूप अरु सीतल मत सब काय ॥८६॥  
 कन्हाई ठाकुर नमौ प्रेमानन्द स्वरूप ।  
 करी महा प्रभु दयानिधि जिहि पै दया अनूप ॥८७॥  
 रघुनाथ दास वन्द हुँ जु प्रेम सुधा की रासि ।  
 जिनके चरितन वस्य सब होहि जगत के वासि ॥८८॥  
 नमौ पुरन्दराचार्य अरु पण्डित देवानन्द ।  
 गौर प्रेम की राशि जो श्रीआचारज चन्द ॥८९॥  
 कृष्णदास ठाकुर नमौ हाट अकाई वास ।  
 सह वासी प्रभुके नमहुँ परमानंद सुख रासि ॥९०॥  
 सावधान है कै नमहुँ ठाकुर गोविंद घोष ।  
 नाम सार्थक कियो प्रभु करि संकीरतन पोष ॥९१॥  
 वन्दहुँ माधव घोष जो श्री प्रभु प्रीति निवास ।  
 दान कियो चैतन्य प्रभु जिहि अभंग स्वर रासि ॥९२॥  
 वासुदेव घोष वन्दौ सावधान थिर भाव ।  
 नहीं गौरगुण राशि विनु और जासु चित भाव ॥९३॥

अति आदर वन्दन करहुँ ठाकुर श्री अभिराम ।  
 सोह सांग की लाकरी जिन कर वेनु ललाम ॥६४॥  
 ठाकुर सुंदरानन्द को वंदहु करि बड़ि आश ।  
 जिन जामुन तरु में करे कदम पुष्प परकाश ॥६५॥  
 परमेश्वर ठाकुर नमो माधवान चित लाई ।  
 नाम लिवाय शृंगार जिन कीरंतन मधि लाई ॥६६॥  
 श्री पुरुषोत्तम नाम जो इष्टदेव जिय जानि ।  
 वन्दो तिनके पद कमल को वरने गुण खानि ॥६७॥  
 गुण विहित जे सबहि विधि अहे पतित निरधार ।  
 सहज कृपा निज शक्ति बल तिन पे दया अपार ॥६८॥  
 बरस सात मधि गात जब उतमादी हरिरूप ।  
 जगमन भावन नृत्य अरु सक्ति अगाध अनूप ॥६९॥  
 गाइक गौरीदाम को हठसु गहत कच पास ।  
 कीनी नित्यानन्द को अस्तुति रासि प्रकास ॥१००॥  
 घोष विदित गोविंद अरु सघर गदाधरदास ।  
 हरि रहे जुग संत जहँ निरखि अमित परकास ॥१०१॥  
 पट अष्टोत्तर सत अवट प्रगट सुरसरी नीर ।  
 जिमि अभिसेक विमेषियै त्रिकालज्ञ सिसुधीर ॥१०२॥  
 धरी मंजरी ही हरी जिहि कान निजु कनेर ।  
 जलज वास जलपत भयो मधि विदमान घनेर ॥१०३॥  
 रटत नाम सुख धाम तिहि संतानि बहत हुलास ।  
 मूरति वंत प्रकास यपु प्रेम सुधारस रास ॥१०४॥  
 करि भक्ति बड़ि वंदो में कारी कृष्ण सुदास ।  
 सुत रतनाकर गुनि कर पुरुषोत्तम परकास ॥१०५॥  
 धरि धीरज द्विध धारि हो दत्ता उधारन नाम ।  
 संगी नित्यानन्द वर तीरथ महि अभिराम ॥१०६॥

पंडित गौरी गाइ हो दाम विदित भरि रंग ।  
 पाण्डित पुरुषोत्तम नमहुँ बहुरि दास सारंग ॥१०७॥  
 आचारज भागोत श्री पंडित मधु सुख साज ।  
 मकर ध्वज कर गाइ हो बहुरि मिश्र कविराज ॥१०८॥  
 श्रीअनंत गोविन्द जुग आचारज निरधार ।  
 पिब प्यारी की जिनि रचो मची कारी जु धमार ॥१०९॥  
 सारवभौम हि वरनि हो करि सुरगुरु पद आस ।  
 प्रभु प्रकास महि जास को विदित कावत रस रास ॥११०॥  
 सुरपति भाय जु गाय हो रुद्र प्रताप अनूप ।  
 जहँ करुना कर गौर प्रभु प्रगटे पट भुज रूप ॥१११॥  
 नाइ माथ जु रि ठाथ पुनि बरन हुं द्विज रघुनाथ ।  
 विप्रदास हरिदास द्विज वैद्य विष्णु पुन साथ ॥११२॥  
 गान कला महि जास को प्रभु को बहु उल्लास ।  
 द्विज हरिदास को वन्दो वैद्य जू विष्णुदास ॥११३॥  
 खुँटिया करि परचार जग नाम कन्हाइ धीर ।  
 जिहि सुत जुग अभिराम प जगन्नाथ बलधीर ॥११४॥  
 उत्कल वासी वरनि हो सुखरासी बलराम ।  
 जगन्नाथ बलराम को जासो हित अति जान ॥११५॥  
 जगन्नाथ सुठि दास पद रज धारि हो निज सीस ।  
 गानकला महि जास के धुनत सीम जगदीस ॥११६॥  
 सिवानन्द पण्डित नमहुँ कासीस्वर गुन गाय ।  
 नमहुँ चन्दनेस्वर बहुरि सिंहेस्वर उर लाय ॥११७॥  
 नम कांवरज श्रीनाथ हूँ प्रगट मिश्रवर दोय ।  
 प्रणमहु तुलसी मिश्र अरु मँहती कासी जोय ॥११८॥  
 हरीभट्ट अभिराम अरु मँहती श्री बलराम ।  
 पट नाइक सुखधाम पुन बरनहुँ माधोनाम ॥११९॥



बसू वंश अति धन्य महि रातानन्द अनन्य ।  
जिहि कुलदेव सुदेव वर विदित सीरि चैन्य ॥१२०॥  
नमहुँ ब्रह्मचारी परम पुरुषोत्तम सुमहंत ।  
गुन अनन्त पुन संतवर भधु पंडित रसवन्त ॥१२१॥  
पंडित श्रीकर गाय हौ रामचन्द द्विज राय ।  
रसनिकेत कविचन्द जदु करि सुचंत हिय लाय ॥१२२॥  
संत विलासी पंडितहि नमहुँ धनञ्जय नाम ।  
दै सरवशु प्रभु पाय जिहि करवा अभिराम ॥१२३॥  
जगन्नाथ पंडित बहुरि कृष्णदास पद आस ।  
आचारज लछमन नमहुँ भक्त भूप परकास ॥१२४॥  
सो०-दास विदित जग जोय सूरज पंडित बरनि हौ ।  
प्रगट सुता जिहि दोय सुठि वशुधा अरु जान्हवी ॥१२५॥  
दो०-श्री मुरारि चैतन्य पद प्रनमहुँ भरि अहलाद ।  
चरित रास पुन जास के अचरज सम प्रहलाद ॥१२६॥  
परमानंद सुगुपत अरु जगन्नाथ वर सेन ।  
बालक राम मुकुन्द कविचंद नमहुँ रस एन ॥१२७॥  
कंसारि वल्लभ दास के सुक सैन जुग संत ।  
नमहुँ भक्त वर भासकर विसकरमा गुनवंत ॥१२८॥  
दास नाम बलराम अति कोविद रस संगीत ।  
नित्यानंद पद कमल माँहि अति पिरीति परतीति ॥१२९॥  
महेस जगदीश वन्दौ पढ़त बढ़त मन मोद ।  
पण्डित जुग मंडित सु एकम उनमाद विनोद ॥१३०॥  
प्रनम हुँ सुत नायायणी श्री वृन्दावन दास ।  
नृत्य गान अति जास कौ कीनौ जग परकाश ॥१३१॥  
बदगाछी वासी नम हुँ कृष्णदास जन भूप ।  
नित्यानंद सरूप पद जुग जिहि जीवन रूप ॥१३२॥

उनमादी अवधूत वर प्रणम हुँ परमानन्द ।  
गंगादाम पण्डित तम हुँ विदित अनादि अमन्द ॥१३३॥  
श्रीजदुनाथहि गाय हौ सांदल सील सुभाय ।  
जगन्नाथ पुरुषोत्तम महि तीरथजु पुरी नाम ॥१३४॥  
पुरी नाम रघुनाथ अरु तीरथ वर श्री राम ।  
वासुदेव तीरथ नम हुँ विष्णुभक्ति रसधाम ॥१३५॥  
बहुरि चैन हित वरनि हौ चारु चरित दिन रैन ।  
श्री उपेन्द्र आश्रम सुखद वर करुणा रस ऐन ॥१३६॥  
पुरी अनन्त हि वरनि हौ हरपि हरिहरानन्द ।  
विमल चरित कविराज अरु कुमुद नाम रसकन्द ॥१३७॥  
पण्डितवर श्री जीव अरु कृष्णदास सिसु नाम ।  
पालक नित्यानन्द जिहि तेज पुंज सुख धाम ॥१३८॥  
आचारज रसधाम पुन वरन हुँ माधो नाम ।  
अमल कुण्ण मङ्गल रचित ग्रन्थ सु जिहि अभिराम ॥१३९॥  
पण्डित गौरी अनुज श्रीकृष्णदास रस रास ।  
श्रीनृसिंह चैतन्य सुठि दास विदित हरिदास ॥१४०॥  
वरन हुँ सङ्कर घोष अति निहकिंचन निरदोष ।  
ढफहि बजावत सुघर वर कीनौ प्रभु कौ तोष ॥१४१॥  
माधौ आचारज नम हुँ जुरि जुग कर निज माथ ।  
प्रगट प्रेम बल मति विमल गङ्गादेवी नाथ ॥१४२॥  
परिहारी भारी नम हुँ नारायण जु अनूप ।  
भक्त भूप पुन चक्रवै सिवानन्द रस रूप ॥१४३॥  
अनगन गनपति जो कहूँ जुरि बैठें इक साथ ।  
एक एक के जो कहूँ प्रगटै अनगन हाथ ॥१४४॥  
हाथ हाथ में जौ कहूँ अनगन लिखन धरन्त ।  
अनगन प्रभु परिवार कौ क्यों हूँ मिलै न अन्त ॥१४५॥



अनगन प्रभु परिकर निकर जानि सवनि निज ईस !  
 ठानि दीनतर सबनि कौं इकठाँ नाथो सीस ॥१४॥  
 कहे सु जे जे नाम पुन मुखियनि के भरि रङ्ग ।  
 कछुक सचे क्रम सङ्ग अरु कछुक रचे क्रम भंग ॥१५॥  
 जान सवनि सम महिम अरु मांनि काव्य अनुरोध ।  
 लघु गुरु के क्रम भंग तैं सुमति करहु जिनि क्रोध ॥१६॥  
 लघु गुरु हरिबल्लभ प्रगट सम प्रभाव सुखकन्द ।  
 जिम तुलसी दल सुठि विमल बहुरि गण्ड की नैद ॥१७॥  
 अगतिनि के गति जगतपति करुनालय भगवान ।  
 भक्त विमुख मुख निराख पुन तुरत धरहि करकान ॥१८॥  
 अघट प्रतिज्ञा सुरसुरी प्रगट करी भरि रंग ।  
 हरिबल्लभ दोषी बिना तारहुँ कीट पतंग ॥१९॥  
 भक्त विमुख कौ भक्त बिन नाहिन रखक कोय ।  
 अम्बरीष आख्यान महि दुरवासा रिषि जोय ॥२०॥  
 भक्त बड़ाई सुनत में सकृत करैं उपहास ।  
 सुकृत रासि को नास अरु गर्भवास कौ त्रास ॥२१॥  
 भक्त बिना भगवन्त की भाक्त करहु किन टेर ।  
 उवट बटोही ग्राम के क्यों हूँ ढरै न नेर ॥२२॥  
 बिन हरिवल्लभ हरिकृपा चाहत अति मति मूढ़ ।  
 देवकीनन्दन सो रची यौ बँदना अति गूढ़ ॥२३॥  
 वृन्दावनदास 'मौकौ' भयो प्रभु को निदेस ।  
 ताकी ब्रजभाषा रची कुंज भ्रमर सुख देस ॥२४॥

इति श्रीवृन्दावनदास विरचित वैष्णववन्दना



## श्रीश्रीवैष्णवाभिधानम्



प्रणम्यादौ कृपादृष्टि-पवित्रीकृत-भूतलम् ।  
 सर्ववाञ्छा-कल्पतरुं गुरुं श्रीपुरुषोत्तमम् ॥  
 महोजमो महाभागान् महापतित-पावनान् ।  
 महाभागवतान् सर्वान् वैष्णवान् विष्णुरूपिणः ॥  
 ततः शची-जगन्नाथौ ख्यातौ भूदेव-रूपिणौ ।  
 श्रीविश्वरूप-श्रीविश्वम्भरयोः पितरौ शुभौ ॥  
 धन्यं श्रीकृष्णचैतन्य-चन्द्रस्याग्रज-रूपिणम् ।  
 शङ्करारण्य-नामानं विश्वरूप-महाशयम् ॥  
 गदाधर-प्राणनाथं लक्ष्मी-विष्णुप्रिया-पतिम् ।  
 साक्षात्-प्रेमकृपामूर्तिं श्रीचैतन्य-महाप्रभुम् ॥  
 तथा पद्मावती-श्रीमन्मुकुन्दौ द्विज-सत्तामौ ।  
 नित्यानन्द-स्वरूपस्य पितरावतुल-श्रियो ॥  
 श्रीमन्नित्यानन्द-चन्द्रं वसुधा-जाह्नवी-पतिम् ।  
 श्रीवीरभद्र-जनकं सर्व-पापण्ड-खण्डनम् ॥  
 यद्यपि प्रकृति-क्षुद्रोऽबुद्धिमान् बालकः स्वयम् ।  
 अनन्त-वैष्णवानन्त-महिमाख्यान-वालिशः ॥  
 तथापि रसना-लौल्यादत्यन्तान्तः कुतूहलात् ।  
 करोमि वैष्णवानन्ताभिधानं स्मरणं कियत् ॥  
 किन्त्वत्र मम हीनस्य सर्वेष्वेतन्निवेदनम् ।  
 क्रम-भङ्ग-भवा दोषा न प्राह्यास्तैर्गुणोदयैः ॥  
 श्रीमाधव-पुरी श्रीलाट्टैताचार्यस्तथाच्युतः ।  
 गोपीनाथः श्रीनिवासो गोविन्दश्चन्द्रशेखरः ॥

हरिदासः श्रीमुरारि-गुप्तो नारायणस्तथा ।  
 मुकुन्दो वासुदेवश्च श्रीदामोदर-पण्डितः ॥  
 पीताम्बरो जगन्नाथः श्रीनारायण-शङ्करौ ।  
 श्रीराम-पण्डितश्चक्रवर्त्ति-नीलाम्बरस्तथा ॥  
 गङ्गादासो द्विजो विष्णुः श्रीसुदर्शन-पण्डितः ।  
 विद्यानिधिस्तथा बुद्धिमन्तः श्रील-सदाशिवः ॥  
 श्रीगर्भः श्रीनिधिः शुक्लाम्बरः श्रीधर-पण्डितः ।  
 कविचन्द्रो रामदासो वनमाली हलायुधः ॥  
 विजयो नकुलाचार्य ईशानो गरुडध्वजः ।  
 जगदीशः सञ्जयश्च श्रीमान् काशीश्वरस्तथा ॥  
 गङ्गादासो वासुदेव-भद्रो राम-मुकुन्दको ।  
 श्रीबल्लभाचार्य-वर्यो मिश्रः श्रील-सनातनः ॥  
 आचार्य-वनमाली च काशीनाथ-द्विजोत्तमः ।  
 ईश्वराभिधान-पुरी श्रीमत्केशव-भारती ॥  
 परमानन्दाख्य-पुरी दामोदर-स्वरूपकः ।  
 नरसिंहाख्यान-तीर्थो रामचन्द्र-पुरी तथा ॥  
 ब्रह्मानन्द-पुरी चैव श्रीसत्यानन्द-भारती ।  
 श्रीमत्सुखानन्द-पुरी श्रीगोविन्द-पुरी तथा ॥  
 गरुडावधूत-देवः पुरी राघव-संज्ञकः ।  
 ब्रह्मानन्द-स्वरूपश्च पुरी श्रीयुत-केशवः ॥  
 श्रीमद्विष्णु-पुरी विश्वेश्वरानन्द-महाशयः ।  
 श्रीमच्चिदानन्दनामाऽनुभवानन्द एव च ॥  
 श्रीमत्कृष्णानन्द-पुरी नृसिंहानन्द-भारती ।  
 काशीश्वराख्यान-देवोऽनुपामः श्रीसनातनः ॥  
 रूपो जीवः श्रीप्रबोधानन्दः शुद्ध-सरस्वती ।  
 रघुनाथ-दास-नामा तथा गोपाल-भट्टकः ॥

रघुनाथो लोकनाथः श्रीमद्भूगर्भ-नामकः ।  
 राघवो जगदानन्द-पण्डितः श्रीपुरन्दरः ॥  
 काशीमिश्रो राय-रामानन्दो बक्रेश्वरो द्विजः ।  
 बाणीनाथ-पट्टनाथो गोविन्दानन्द एव च ॥  
 सदाशिव-कविचमाभृदासवंश-गदाधरः ।  
 श्रीशिवानन्द-सेनश्च श्रीमुकुन्द-भिषग्वरः ॥  
 श्रीमन्नरहरिः श्रील-रघुनन्दन एव च ।  
 रघुनाथ-दास-वैद्योपाध्याय-मधुसूदनो ॥  
 देवानन्द-द्विजवरः श्रीलाचार्य-पुरन्दरः ।  
 श्रीयुक्ताचार्यचन्द्रश्च श्रीकृष्णदास-पण्डितः ॥  
 सतीर्थ-परमानन्दः श्रीमत्-सृष्टिधरस्तथा ।  
 गोविन्दो माधवो वासुदेवो घोषाभिधानभृत् ॥  
 श्रील-श्रीरामदासः श्रीसुन्दरानन्द एव च ।  
 श्रीपरमेश्वरः श्रीमत्-पुरुषोत्तम एव च ॥  
 श्रीकृष्णदासः श्रीगौरीदासः श्रीकमलाकरः ।  
 वंशीगीत-प्रकाशी श्रीवंशीवदन-दासकः ॥  
 श्रीमदुद्धरण-श्रीलद्विजश्रीपुरुषोत्तमौ ।  
 कविराज-मिश्रवर्यो मधुसूदन-पण्डितः ॥  
 श्रीमद्भागवताचार्यो गोविन्दाचार्य एव च ।  
 श्रीसार्वभौमः श्रीयुक्तो नन्दनाचार्य एव च ॥  
 श्रीमत्-प्रतापरुद्रश्च रघुनाथो धरामरः ।  
 हरिदास-द्विजः श्रील-सारङ्गो मकरध्वजः ॥  
 श्रीवृन्दावन-दासः श्रीजगदीशाख्य-पण्डितः ।  
 प्रद्युम्न-मिश्रस्तपनाचार्यः श्रीभगवांस्तथा ॥  
 ओडजः श्रीविप्रदासोऽम्बष्ठ-श्रीविष्णुदासकः ।  
 वनमाली-दास-वैद्यो हरिदासो गदाधरः ॥

श्रीडूजः श्रीकृष्णदासः श्रीकाशीश्वर-पण्डितः ।  
 बलराम-जगन्नाथ-दासौ श्रीचन्दनेश्वरः ॥  
 सिद्देश्वरः शिवानन्दो बलराम-महत्तमः ।  
 सुबुद्धि-भिश्रस्तुलसी-मिश्रः श्रीनाथ-संज्ञकः ॥  
 काशीनाथो हरिभट्टः पट्टनायक-माधवः ।  
 रामानन्द-बसुब्रह्मचारी श्रीपुरुषोत्तमः ॥  
 श्रीरामचन्द्र-भूदेवः श्रीमच्छ्रीकर-पण्डितः ।  
 यदुनाथ-कविचन्द्रः पण्डितः श्रीधनञ्जयः ॥  
 आचार्य-श्रीजगन्नाथः श्रीसूर्यदास-पण्डितः ।  
 श्रील-श्रीलक्ष्मणाचार्यः श्रीकृष्णाचार्य एव च ॥  
 चैतन्यदासः परमानन्द-गुप्त-भिरग्वरः ।  
 श्रीजगन्नाथ-कंसारि-सेनौ श्रीयुक्त-भास्करः ॥  
 कविचन्द्र-श्रीमुकुन्दः श्रीरामः सेन-बल्लभः ।  
 श्रीयुक्त-बलरामाख्य-दासो महेश-पण्डितः ॥  
 परमानन्दावधूतः श्रीगङ्गादास-पण्डितः ।  
 कविराज-श्रीमुकुन्दानन्दः श्रीजीव-पण्डितः ॥  
 चिरञ्जीवः कृष्णदासः कृष्णदासाख्य-बालकः ।  
 यदुनाथ-दास-वर्यः श्रीकृष्णदास-पण्डितः ॥  
 राम-तीर्थः कृष्ण-तीर्थः पुरी श्रीपुरुषोत्तमः ।  
 श्रीमज्जगन्नाथ-तीर्थो रघुनाथ-पुरी तथा ॥  
 श्रीवासुदेव-तीर्थश्च श्रीलोपेन्द्राभिधाश्रमः ।  
 अनन्ताभिधान-पुरी हरिहरानन्द-भारती ॥  
 श्रीमन्नृसिंहचैतन्यः श्रीमदाचार्य-माधवः ।  
 शङ्करो माधवानन्दाचार्यो दास-सनातनः ।  
 शिवानन्द-चक्रवर्ति-द्विजनारायणादयः ॥  
 य एतान् स्मरति प्रातः शृणुते वापि भक्तितः ।  
 कस्मिन् कालेऽपि स पुमान् यातनां नाहेति ध्रुवम् ॥

एतान् संस्मृत्य संस्मृत्य यो नमस्कुरुते जनः ।  
 श्रीवैष्णव-पदे तस्य नापराधः कदाचन ॥  
 लभते वैष्णव-पदमेतेषां स्मृतिमात्रतः ।  
 भाक्तश्च प्रेम-पीयूष-मधुरां देवदुर्लभाम् ॥  
 सर्वेषामप्युपादेयः सर्ववेदाधिकस्तथा ।  
 श्रवणान्नयनाश्रितार्दाप दूरो हि वैष्णवः ॥  
 इति श्रील-देवकीनन्दन-कविराज-विरचितं  
 श्रीश्रीवैष्णवाभिधानं सम्पूर्णम् ।

—ॐ नमः—

## ❀ श्रीश्रीसंक्षिप्त-वैष्णववन्दना ❀

ॐ नमः

भज भज मन	श्रीगुरु-चरण
पतित दुर्गते	सकल वेदेर सार ।
वन्दो श्रीचैतन्य	प्रेमधन दिते
युगल चरण	परम करुणा यार ॥
नवद्वीपपुरी	नित्यानन्द धन्य
सेइ त नगरे	सीतानाथ सेइ ठामे ।
	करिव वन्दन
	गदाधर तार वामे ॥
	वृन्दावन करि
	सुरधुनीतीरे वास ।
	आनन्दे विहरे
	चैतन्ये यत दास ॥

सवार चरण	नीलाचलवासी यत ।	करिव वन्दन	दीन हीन जने	आपनार गुणे
संचेपे चरण	विस्तारि बन्दिब कत ॥	करिव वन्दन	प्रभु देह पद छाया ॥	अम्बिका निवास
श्रीरूप सनातन	जीव भट्ट रघुनाथ ।	करिया वन्दन	वन्दों अभिराम	अति बलवान्
भट्ट-गोपाल-चरण	दास-रघुनाथ-साथ ॥	करिव वन्दन	वन्दों सरस्वती	अति शुद्धमति
मिश्र पुरन्दर	वन्दि तौहार चरण ।	नवद्वीपे धर	जाति कुल छाड़ि	धक् धक् करि
स्वरूप दामोदर	करिया अति यतन ॥	चरण बन्दिब	गौराङ्ग करिल सार ॥	लइया गागरी
श्रीवास महाशय	वन्दना करिव आगे ।	रामानन्द राय	वन्दों नरहरि	आपनार गुणे
याँहार नाटके	सिंहरवे करी भागे ॥	यत दुःख थाके	दुःखी तापी जने	वितरल सकरुणे ॥
श्रीशची ठाकुराणी	वन्दना करिव आमि ।	चरण दुखानि	श्रीरघुनन्दन	करिया कीर्त्तन
श्रीवास-धरणी	दुहुँ-पदे परणामि ॥	अच्युत-जननी	याँहार कीर्त्तने	बाहुर दोलने
गौराङ्ग-चरण	ताँहार चरण सेवि ।	भजे येइ जन	बसु रामानन्द	सेन शिवानन्द
वैष्णव-चरण	श्रीगुरु-चरण भावि ॥	करिव वन्दन	कवि कर्णपूर	भक्तेर सूर
अनाथेर वन्धु	सर्वजीवे करेन दया ।	करुणार सिन्धु	बन्दिब श्रीधर	माधव शङ्कर
			वन्दों हरिदाम	महिमा प्रकाश
			प्रभुर सहित खेला ।	नामे वाँधिल भेला ॥

द्विज हरिदास काञ्चन-नगरे वास  
गौरप्रेमते आनन्द ।  
दुइ पुत्र यार गुणेर सागर  
श्रीदास गोकुलानन्द ॥  
बन्दों बासुघोष सदाइ सन्तोष  
गोविन्द यार भाइ ।  
यार अङ्गने बिनोद—बन्धने  
नाचे गौर निताइ ॥  
चौपट्टि महान्त चरित्र अनन्त  
सकलइ ब्रजेर गोपी ।  
निरि—पुरीगण करिव बन्दन  
आदि केशव भारती ॥  
बन्दों दुइ भाइ जगाइ मधाइ  
हरि हरि बलि नाचे ।  
यार दिया नाम गौर गुणधाम  
राखिला आपन काछे ॥  
गया—गङ्गा—काशी— अयोध्यादि—वासि—  
गणेर बन्दना करि ।  
सवार चरण करिव बन्दन  
ये थाके मथुरापुरी ॥  
नगर—भितरे येवा बास करे  
यत वा यमुना—तीरे ।  
ता सवा—चरन करिव बन्दन  
धार आमि शिरोपरे ॥  
ब्रजवासी—धरे येवा बास करे  
जलेर गागरी वय ।

ता सवा—चरण करिते बन्दन  
मनेर उल्लास हय ॥  
वृन्दावनपुरी आनन्द लहरी  
बाम करे यत जन ।  
ता सवा—चरण करिव बन्दन  
सानन्दित हये मन ॥  
यत कुञ्जवामी ब्रजेते निवासी  
सवार बन्दना करि ।  
संक्षेपे चरण करिव बन्दन  
विस्तारि बन्दिने नारि ॥  
मधुवने हय तालवने रय  
कुमुदवने यार घर ।  
बहुला—निवासी यत ब्रजवासी  
सवे मोरे दया कर ॥  
श्रीकुण्डनिवासी श्यामकुण्डवासी  
गोवर्द्धनवासी यत ।  
एकत्र करिया करिव बन्दन  
विस्तारि बर्णिव कत ॥  
दिधी काम्यवने थाके यत जने  
सवार चरण धरि ।  
वृषभानुपुरे आर नन्दीश्वरे  
सकलेर बन्दना करि ॥  
यावट—निकटे किशोरीर वटे  
बास करे यत जन ।  
कोकिलवन—वासी वैठल—निवासी  
करि चरण बन्दन ॥



पदचिह्न—स्थाने रासलीला स्थाने  
 दहि ग्रामे यत जन ।  
 कोटिवन—वासी शेषशार्ङ्ग—निवासी  
 करि चरण वन्दन ॥  
 ब्रज वृन्दावने मण्डली—वन्धने  
 तिन शत चौषट्ठि ग्राम ।  
 मुञ्जि मूढमति कि आछे शक्ति  
 प्रतक्ये लइते नाम ॥  
 रामघाट—तटे आर अक्षय—वटे  
 नन्दघाटे यत जन ।  
 भद्रवन—वासी भाण्डीर—निवासी  
 करि चरण वन्दन ॥  
 वेलवने घर मान सरोवर  
 लौहवने यार घर ।  
 बलदेव—वासी यत ब्रजवासी  
 सवे मोरे दया कर ॥  
 राश्रोले गोकुले यमुनार कुले  
 बने उपवने यत ।  
 संक्षेपे चरण करिव वन्दन  
 एइ मोर अभिमत ॥  
 नन्दीश्वरे गया रामकृष्ण देखिया  
 आनन्दे हइल भोर ।  
 खेलनवने गया यमुना देखिया  
 मन फिरि गेल मोर ॥  
 हेचड़ी खेचरी पेटका पिछुड़ी  
 मिलि ग्रामे यत जन ।

दहेगा—पहेगा— भहेगा—निवासी  
 करि चरण वन्दन ॥  
 वैष्णव—वन्दन ये करे पठन  
 येवा करये कीर्तन ।  
 अविलम्बे तारे अग्रय मिलये  
 श्रीकृष्णप्रेम—रतन ॥  
 देवकीनन्दन करिव वन्दन  
 आमा हते नाहि हय ।  
 दन्ते तृण धरि निवेदन करि  
 द्विज हरिदासे कय ॥  
 वैष्णव—वन्दन प्राते येइ जन  
 येवा पड़य शुनय ।  
 वृन्दावन याय कुञ्जसेवा पाय  
 नाहिक शमन भय ॥

इति श्रीश्रीसंक्षिप्त-वैष्णववन्दना समाप्ता ।



॥ श्री राधारमणो जयति ॥

## अथभक्तसुमिरनीलिख्यते

॥ चौपाई ॥

सुमिरौ श्री मन-हरण अनूप । महाप्रभु चैतन्य सरूप ॥१॥  
 श्री नारायण-दास बखानी । भक्तमाल अति ही रस सानी ॥  
 आज्ञा दी श्री राधा-रमण । भक्त जु नाम मात्र रस श्रवण ॥  
 भक्त-माल रतन की माल । कंठ करन हित रची रसाल ॥  
 कंठ किये माला मन हरणी । सुधि आवन यों भक्त सुमिरिनी ॥  
 प्रथम भक्त भक्ति गुरु ईस । सुमिरि चरण मधि राखी सीस ॥  
 मीन वराह कमठ अरु वामन । परसुराम रघुनाथ जु पावन ॥  
 श्री-नरसिंह सुमिरि सुखदाई । भक्त प्रह्लाद अति रति भाई ॥  
 युध कलकी श्रीकृष्ण अरु व्यास । पृथु हरि हंस मन्वंतर बास ॥  
 यज्ञ ऋषभ दध्याय धन्वंतर । चट्टीपति दत्ता कविल जु ध्रुववर ॥  
 मनकादिक चौबीसीतार । भक्त इष्ट गाये सुख सार ॥  
 विन्ह शंख चक्रादिक जान । प्रभु पद पंकज कर नित ध्यान ॥  
 विधि नारद शंकर सनकादि । कपिल स्वयंभू जनक प्रह्लादि ॥  
 बलि भीष्म शुक धर्म सरूप । अजामिल प्रभु कृपा अनूप ॥  
 विष्वक्सेन जै विजै प्रवल बल । नन्द सुनन्द सुभद्र भद्र भल ॥  
 चण्ड प्रचण्ड विनीत पुनीत । कुमुद कुमुदाक्ष रु सील सुरीत ॥  
 श्रीसुग्रीव सुमेन पारिपद । नव भक्तान में भक्ति महा हृद ॥  
 कमला गरुड हनुमान जामवन्त । सुग्रीव विभीषन सबरी खगपति ॥  
 ध्रुव उदय अक्रूर विदुरवर । अम्बरीष सुदाम प्राह गज-सुन्दर ॥  
 पाण्डव चन्द्रहास चित्रकेत । मैत्रे कुन्ती वधू समेत ॥  
 जोगेश्वर भुतदेव सुचक्रन्द । अंग प्रियव्रत पृथु जग चन्द ॥२॥

४७ )

साधक-कण्ठभूषण

सेस सूत सौनक परचेता । सतरूपात्रै सूता सूचेता ॥३॥  
 सुमर परीक्षित सुमति मदालस । यज्ञपतिनी व्रजनारि निरालस ॥  
 प्राचीन-वराह सतव्रत भागीरथ । सगर रघुगन हरिचन्द हरिपथ ॥  
 बालमीक मिथिलेस सुजानि । भरथ दधीचि रुक्मांगद जान ॥  
 सुरथ सुधन्वा सिचिरु विध्यावलि । नोल मोरध्वज ताग्र रसाल ॥  
 अलरक रिभु इक्ष्वाक रु ऐल । सुचि सतधन्वा गाध रघु सैल ॥  
 रंतिदेव अमूरति नहुप उत्तरंग । भूरि देवल वैवस्वत मनु अंग ॥  
 जजानि दिलीप पूर यदुराय । मानवाता ग्रह निमि समुदाय ॥  
 पिप्पल भरद्वाज सरभंग । संजय दक्ष समोक सुरंग ॥  
 उत्तानपाद अरु जाम्बवल्क-ऋषि । सुमिरि निरंतर यहै परमसिद्धि ॥  
 कवि हरि करभाजन रु सुचि । अंतरिक्ष अरु चमस प्रवृत्ति ॥  
 आविर होत्र अरु द्रमिल प्रसिद्ध । पिप्पल आदि ए सब हि मिद्ध ॥  
 अगस्त्यपुलस्त्यपुलहसौरभऋषि । चिमनवशिष्ठर्द्धमसुव्याससिद्धि ॥  
 अत्रि ऋचीक गर्ग गौतम सूचि । लोमस भृगु दालभ्य परम रुचि ॥  
 विश्वामित्र माण्डव दुर्बासा । बहुसिख भृंगी श्रीअंगीरामा ॥  
 जामदग्नि जाबल्य मयादस । पारासर कश्यप परवत रस ॥  
 स्मृति अठारह और पुरान । इनके करता रस की खान ॥  
 जयन्त सिष्ट विजयी अनिचार । सुराष्ट्रराष्ट्र धर्द्धन रस सार ॥  
 अशोक धर्म-पालक तनुवेता । मंत्री बर्य सुमन्त सूचेता ॥  
 अंगद सुग्रीव दधिमुख जानो । दुषिद मयंद वल्का पहिचानो ॥  
 सुसेन दधीमुख कुमुद नीलनल । सरभा गवैगवाक्ष सु अतिबल ॥  
 पनस गन्ध मादन बांदरवार । पदम अठारह यूथप सुन्दर ॥  
 गोप प्रजन्य सुतनय नन्द जानो । धरानन्द ध्रुव-नन्द बखानी ॥  
 श्रीउपनन्द अभिनन्द सुतागर । नन्द सुनन्द अधिक सुखसागर ॥  
 करमा धरमा नन्द अभिनन्दन । करत निरंतर सब जग वन्दन ॥  
 महारि जसोदा कीरती-रानी । श्रीवृषभानु-कुंवरि रससानी ॥४॥

श्री ललितार्द्र सहचरी वृंद । सखा संधाहु सुवल सुखकन्द ॥४८॥  
 मधु-मंगल भोज अजुर्न श्रीदामा । मित्र अनेक गनै को नागा ॥  
 रत्नक पत्रक पत्री दास । मधु-कंठ मधुवर्त प्रकाश ॥  
 रसाल विसाल प्रेमकन्द प्राण । चन्द्रहास मकरंद रस दान ॥  
 पयद बकुल सब सेवा भीजे । नन्द-कुंवर जिन पर अति रीके ॥  
 सप्त दीप में जे हरिदास । ते सो पर करौ कृपा प्रकाश ॥४९॥  
 मध्य दीप नव खण्ड बखान । सेवक सेव्य सब ही रसखान ॥  
 स्वेत दीप अनुरागी भक्त । पलक परै सु भूल गयो जक्त ॥  
 पदम संकु इला पत्र जु सर्प । वासुकि अजित असु कमल सुअर्प ॥  
 तक्षक कर कोटक हरि प्यारे । श्री-अनन्त प्रभु नाम उचारे ॥  
 आरस भक्त इते सब भये । अब सुमिरौ जे काल में नये ॥  
 रामानुज अरु मध्वाचारज । विष्णुस्वामि निवाहित आरज ॥  
 विष्णुसेन पटकोप मंगल मुनि । वोपदेव श्रीनाथ जगत धनि ॥  
 पुण्डरीकाक्ष परांकुशध्याय । राममिश्र जामुन मुनि गाय ॥  
 श्रुति-प्रज्ञ श्रुतिदेव बिदांबर । श्रुतिधामा श्रुति-उदाधि जु सुन्दर ॥  
 लाला-चारज श्री-गुरुनिष्ठ । देवाचारज महा वरिष्ठ ॥  
 हरियानन्द राधवानन्द । जिनके प्रगटे रामानन्द ॥  
 भावानन्द नरहरि पदमावत । अनन्तानन्द हरि गुन गावत ॥  
 जोगानन्द गयेस करमचन्द । रामदास श्रीरंग सदानन्द ॥  
 कृष्णदास पैहारी नरहरि । भज दिन रैन और सब परि हरि ॥  
 मेढा हठी नरायन सूरज । पुरपा पृथु तपूर भक्ती सज ॥  
 टीला पदम नाम गोपाल । देवा हेम कल्याण रसाल ॥  
 गदाधारी गंगा नारीवर । विष्णुदास कान्हर चांदन कर ॥  
 बाइस बीरो रंगा नाम । कोरु सुमेरु देव अगिराम ॥  
 अग्रदास श्री-संकराचारज । नामदेव जयदेव जु आरज ॥  
 श्रीधर बिल-मंगल मंगलतन । ज्ञानदेव श्री-विष्णुपुरी धन ॥५०॥

श्री-तिलोचन बल्लभा-चारज । भक्तदास भक्त सुख कारज ॥५१॥  
 नरसिंह रूप है तन मन भये । पुनि दूसरथ है तन तजि गये ॥  
 बांधे सुने कृष्ण जय दाम । प्राण तजे ताही छिन भास ॥  
 महा प्रसाद अबला जान । राजा निपुन कटायो पाणि ॥  
 करमा सिल-रूपि की भक्त । हरि रस मगन भूलि गई जक्त ॥  
 भक्तन हित सुन गरल पिबायो । सो जस पात पात में छायो ॥  
 रंगनाथ को सदन बनायो । जैन धर्म रचि तन विसरायो ॥  
 हंस बांधे चाने की लाज । हरि रक्षा करि मारे काज ॥  
 मृत अपनो जय हरि जन मारयो । कन्या दई अपनपो वारयो ॥  
 कामधुज देवा भुवन चौहान । जैमल खाल श्रीधर पहिचान ॥  
 निसकिचन हरिपाल सुहायो । विप्र भक्त हित साखि बुलायो ॥  
 रामदास के सदन सिधारे । जसु स्वामी के वृषभ संभारे ॥  
 धार-मुखी रु अलह नन्ददास । बीच राम दै कार विस्वास ॥  
 माला तिलक निष्ठ इक दास । अन्तर निष्ठ महा सुख रास ॥  
 गुरु-निष्ठा में परम प्रवीन । श्रीरैदास भक्त रस लीन ॥  
 श्रीकबीर ओ पीपा भृत्य । धना सैन सांचे हरि कृत्य ॥  
 सुखानन्द रु सुरसुरानन्द । नारी सुरसरि अति सुख कंद ॥  
 श्री-नरहरियानन्द सुधीर । पदम-नाम दै मेटी भीर ॥  
 तत्त्वा जीवा दक्षिण देश । माधौ-दास हरि भक्ति अशेष ॥  
 श्रीरघुनाथ-गुसाई नाम । सुमिरौ जो चाहत हो स्वाम ॥  
 भजि लै श्री नित्यानन्द राम । उर आवत वृन्दावन धाम ॥  
 महा-प्रभू श्री कृष्ण-चैतन्य । कलि अवतार कियो जग धन्य ॥  
 सूरदास सागर गुन आगर । परमानन्द अति रसिक उजागर ॥  
 कैसौभट्ट श्रीभट्ट सु साधु । श्रीहरिव्यास सब रस अगाधु ॥  
 सुमिरि दिबाकर बीठलनाथ । श्रीगिरिधर गोविन्द जु साथ ॥  
 बाल-कृष्ण श्रीगोकुलनाथ । श्री रघुनाथ ओ जदुनाथ ॥५२॥

श्रीधनश्याम पगे कृष्णदास । वद्धमान गंगल रस-रास ॥१००॥  
भीषम रामराय परताप । जेम-गुसाईं मेय्यो नाप ॥  
विठलदास माथुर अभिराम । हरी-राम कमलाकर नाम ॥  
श्रीनारायण-भट्ट प्रवीन । बल्लभ रास रस अति ही लीन ॥  
रूप सनातन रस आचारज । हूँ करि प्रगट किये रस कारज ॥  
श्रीहरिवंस गुसाईं भजौ । कुञ्ज केलि रसही में सजौ ॥  
श्री स्वामी हरि-दास रसीले । जिनके उर में जुगल छवीले ॥  
श्रीमत व्यास रस-रास-रसिक वर । हरि के दास किये सर्वोपरि ॥  
श्री मत जीव-गुसाईं धीर । रस-सागर उर अति गंभीर ॥  
श्री-गोपाल-भट्ट गोस्वामि । राधा-रमण प्रगट अभिराम ॥  
श्रीपीकेश भगवान सुनागर । बीठल विपुल महा रस सागर ॥  
लोकनाथ जगन्नाथ महाशय । मधु गुसाईं अति स्वच्छ आसय ॥  
कृष्णदास गोविंद अधिकारी । दूजे मदन-मोहन उर प्यारी ॥  
श्रीरंग घमंडी जुगल-किशोर । श्रीभूगर्भ रु सुरस हिलोर ॥  
श्यामानन्द श्री-रसिकानन्द । जिन सुमरे उपजत आनन्द ॥  
श्रीहरिनाभ तिलोचन धीर । सोभा सीवा आधार गम्भीर ॥  
आसाधर श्रीराज विचित्र । सधना नीर पदारथ चित्र ॥  
श्रीकाशीश्वर परम-रसाल । लाड लड़ाये गोविंदलाल ॥  
कृष्णदास कट हरिया डूंगर । सोभू ऊदा राम नाम वर ॥  
विमलानन्द पदम सुखरास । रामदास जग मेय्यो त्रास ॥  
सबल जती राम सन्त सीही । खोजी स्याम मनोरथ जीही ॥  
दूल्हा पदम रांकां शोभू जप । चाचा गुरु सवाई हरि तप ॥  
जाडा चांदा नापा माली । कीता चतुर प्रभु रति प्रति पाली ॥  
लछिमन लफरा लड्ड जु सन्त । सूरिज कुम्भनदास महंत ॥  
खेम विमानी विरही भरत । भावन नफर हरिदास सुचरित ॥  
चक्रपाति हरिकेश लुटेरा । तिलोक पुखरदी हरि कियो नेरा ॥२५॥

उद्धव विजुरी वन चर वंस । सोम भीम महारा पर संस ॥२६॥  
सोमनाथ भजि धिको विसाखा । लखध्याना मुकुन्द अभिलाखा ॥  
बालमीक रघु वृद्ध व्यास । गनेस त्रिविक्रम अति सुख रास ॥  
कांभू जगन विठल आचारज । हरिभू राधौ अति ही आरज ॥  
लाला लाखा श्री हरिदास । छीतर उद्धव कियो प्रकाश ॥  
घाटम वूरी और कपूर । देवानन्द खेम रस पूर ॥  
श्रीमुकुन्द नर-हरियानन्द । संतराम अति ही आनंद ॥  
विष्णु मही पति वीदा गांडन । बाजू सुत छीत माधौ जन ॥  
श्रीरंग द्वारकादास दामोदर । रूपा नरहरि कान्हर सुन्दर ॥  
केमव श्रीभगवान प्रयाग । नागु सुत गोपाल सराग ॥  
केशव पुनि हरिनाथ भीम भजि । ब्रह्मचारी गोविन्द भक्ति सजि ॥  
व्येता पंडा सु गोपीनाथ । श्रीमुकुन्द गजपति गुण गाथ ॥  
बालकृष्ण बड़ भरथ गुपाल । उर राजत हरि रसिक रसाल ॥  
अच्युत विद्यापति ब्रह्मदास । सुमति बहोरण गोविंद आस ॥  
चतुर बिहारी गंगाराम । लाल वरसानियां अभिराम ॥  
केशी नंद सुवन की छाप । परसराम मेटत सब ताप ॥  
धियदयाल पूरन नृप भीषम । जनदयाल श्रीआस करन सम ॥  
श्रीरघुनाथ अरु गोपीनाथ । रामभद्र बीठल रघुनाथ ॥  
गुंजा-माली दासू स्वामी । श्री चिरामर हठ निढ-कामी ॥  
उत्तम जदुनंदन गोविन्द । मुरली सोती रामानंद ॥  
हरिदास मिश्र भगवान मुकुंद । केशी दंडौती आनंद ॥  
विष्णुदास वेनीजु चतुर-भुज । सीता भाली सुमिर मिटै रुज ॥  
प्रभुता कुवरि उमा भठियानी । सोभा श्री-गणेश देरानी ॥  
गंगा गौरी गोपाली कृत । कला लखा सति भामा अति सति ॥  
मानमती सुवि गढो सुदेस । जमुन कोली भक्ति प्रवेश ॥  
रमा मृगा देवा जुग जेवा । केकी कमला भक्तनि सेवा ॥२७॥



हीरा हरि नेरी सु देवकी । एजुबती नहि काहू सकी ॥५२॥  
 नर बाहन जापू बीदावत । धारा अनुभई ऊदारावत ॥  
 जवंत रूप अजुम गोविन्द । श्री-जनार्दन हेम सुखंद ॥  
 नदा दमोदर ईश्वर गावै । श्री सापिले मयानंद भावै ॥  
 तुलसीदास जटिया ते भाऊ । दास सु मोहन बारी दाऊ ॥  
 रानिया राम लछमन भगवान । श्रीजगदीशदास गति मान ॥  
 उभै गुपाल लाल पतवारी । श्री नरसी कीरति विस्तारी ॥  
 श्रीद्विदाम जमोध वर वंस । नंददास सो जग पर-संस ॥  
 जन-गोपाल साधो विसवास । अंगद को हीरा परकास ॥  
 नृपति चतुर-भुज मीराबाई । जिनकी कीरति रमिकनि गाई ॥  
 पृथ्वीराज राजा बड़ भाग । रामचंद्र नीवां रस भाग ॥  
 धर्म-राम वीरम सुरतान । ईश्वर अखैराज भगवान ॥  
 राय-मल्ल मधुकर करमसी । कान्हर नृप जस राजत ससी ॥  
 श्री-खैमाल रतन राठौर । जाको कुल सब जग सिर मौर ॥  
 राम नृपति राजा तिन धरनी । बड़ी उदार संत मन हरनी ॥  
 श्रीकिशोर मंतनि के संमत । हरिदास हरि सों गति मति रति ॥  
 श्रीचतुरभुज रसिक सुजान । कृष्णदास जाड़ा गुण गान ॥  
 श्रीप्रद्योत रसराम रसिक बस । उयाये जिय द्वै प्रेम सुधा रस ॥  
 श्रीप्रद्योत विमलानंद संत । भक्त भागवत गुन नहि अंत ॥  
 मूरदास रस कथा अंत । मदनमोहन जिहि छाप लसंत ॥  
 श्रीकाव्यार्यानि तिय रंग मंगी । श्रीकमुरारि कीरति जग-भगी ॥  
 श्रीमंत तुलसीदास अनन्य । मानदास जग में अति धन्य ॥  
 मुर्मिरी श्री बनवारी श्याम । श्रीनारायण-मिश्र अभिराम ॥  
 राधो श्री हरिदास चावनो । परसराम गुन निसि दिन मनो ॥  
 भट्ट-गदाधर परम रसज्ञ । चौमुख चौर सब सरवज्ञ ॥  
 चंद जगत ईश्वर अरु कोहल । साधु अलूको दाख्यो बोल ॥५३॥

साधो करमानन्द सु मांडन । जीवानंद रहे तन मन हरि सन ॥५४॥  
 नारायण दास सु चारन । पृथ्वीराज नृप कुल निम तारन ॥  
 कायां पति सीधा मुखदाई । रतनावती सु कीरनि गाई ॥  
 जगन्नाथ श्री-मथुरादास । नृतक-नारायण दान प्रकास ॥  
 राधाकृष्ण नाम जा के मुख । नाथ भक्ति ताके उर बहु सुख ॥  
 धोहिथ राम गोपाल कुँवर वर । गोविंदमांडिल छीनस्वामि पर ॥  
 श्रीजसवंत गदाधर कान्हर । श्रीअनंतानंद नारद उर धर ॥  
 दीनदास जु स्याम हरि नाम । बछ पातल गोसु हरि लाम ॥  
 रामदास भगवान विहारी । कृष्ण जीवन जीवन उर वारी ॥  
 श्यामदास श्री हरि नारायण । उद्धवराज रैन जस गाथण ॥  
 परसराम गंगा किंकर हरि । कृष्ण दास कूंडा जू उरधरि ॥  
 कृष्णदास गोपानंद खेम । सोदा जै देव राधो नेम ॥  
 विदुर दयाल दमोदर मोहन । श्री परमानंद उद्धव सोहन ॥  
 चतुरदास नागा रंग मंगे । गोसां परमानंद जग मंगे ॥  
 प्रधान द्वारका मथुरा खोरा । बीठल श्री भगवान कौ जोरा ॥  
 चीवर श्याम जु खेम गोपाल । संतन सौं करी रति प्रतिपाल ॥  
 केवल कृपा सेवा साध । श्री प्रयाग जंगी आराध ॥  
 पूरण बनवारी भगवान । जगत विनोदी नरसिंह जान ॥  
 श्री किशोर जगन्नाथ दिवाकर । खीची खेम भक्ति की आकर ॥  
 सुमति सलूधौ उद्धव संग । श्री परमानंद हरि रस रंग ॥  
 लोला खेम भजन सुख सागर । केशी जोगी दास उजागर ॥  
 हरीदास कान्हर रति रासी । भगवान नीवा खेता सौ ॥  
 श्री जसवंत भीम जैमाल । विष्णुदास हरिदास गोपाल ॥  
 नाथ भट्ट वृज रस पारायण । करमैती हित रसिक रसायण ॥  
 सरगसेन श्री गंग सुवाल । वृज रस गायो करे निहाल ॥  
 श्री मत लालदास सुदिवाकर । साधो खाल महा रस आकर ॥५५॥



राघो रसिक प्रेम निधि घन्य । हरि नारायण नृपति अनन्य ॥४॥  
उद्धव पदम सुविन्य कल्याण । बोहिथ रामदास सुख खान ॥  
श्री परमानंद तुलसीदास । दयाराम बाई रति राम ॥  
वीरा हीरामणि नीरा तिय । लाली लड़ा गोमती अति प्रिय ॥  
जुग पार्वती श्री केशी सेव । जेवा हरपां भजि हरिह्वे ॥  
बाहर रानी भक्त उपासन । श्री गंगा जमुना रैदासिनि ॥  
कुचरि राय कीरति विस्तार । कान्हर दास लहो रस भार ॥  
परमा केशव नाम लुटेरा । केवल राम जग भरम निवेरी ॥  
श्री हरिबंस विरक्त प्रवीन । श्री कल्याण रस में नित लीन ॥  
काहक बीठलदास सदानंद । श्री रंग स्यामदास आनंद कंद ॥  
लाखो मारु मुदित कल्याण । वंशी परस नारायण गान ॥  
संकर चेता माल गोपाल । लीला गाई रसिक रसाल ॥  
कृष्णदास हरिदास धुरंधर । चित्त सुख तीरथ राम दामोदर ॥  
नरसिंहारण्य सु कीर्ती भक्ति । श्री मधुसूदन माधो हरि रति ॥  
श्री प्रबोधानंद रंगीन । गाइ कुंजकेलि रसिक प्रवीन ॥  
और संत प्रिया रंग भीन । श्री जगदानंद अति रस लीन ॥  
रामभट्ट हरि भजन विलास । पूरण और द्वारिकादाम ॥  
लछिमन भट्ट हरि परम धर्म पर । कृष्णदास करनी सर्वोपर ॥  
अति रस विप्रन मदाधरदास । श्री नारायण दास सुवास ॥  
श्री भगवानदास भरसाई । श्री कल्याण अतिसै सुखदाई ॥  
संतदास श्री माधोदास । श्री कान्हर जग भक्ति प्रकाश ॥  
लेखक गोविन्ददास रसाल । जा उर राजी भक्ति सुमाल ॥  
जगदसिंह नारायण इष्ट । गिरधर ग्वाल कवीश सुवृष्ट ॥  
गोपाली हरि भक्त लड़ाये । रामदास नीके गुन गाये ॥  
रामराय कामादिक टारे । श्री भगवन्त मुदित अति प्यारे ॥  
लालमती बाई सुखदाई । वृन्दावन वसि रति निधि पाई ॥३०॥

ये सब भक्त नाम सुठि गाये । रसमय ताते मो मन भाये ॥  
श्रीमत राधा रमण पुजारी । आज्ञा दी सो मैं उरधारी ॥  
भक्त नाम सुमिरनी कीनी । पढ़त सुनत अति ही रस भीनी ॥  
प्रात पढ़े भक्तन के नाम । तौ उर झलकै स्यामा स्याम ॥  
भक्त सुमिरनि सुगरन करै । प्रियादास तिन पद रज धरै ॥  
॥ इति श्रीरसिकराज श्रीप्रियादासजू कृत भक्तसुमिरनी सम्पूर्ण ॥

### श्रीश्री वैष्णवशरण ।

वृन्दावनवासी यत वैष्णवेर गण ।  
प्रथमे बन्दना करि सवार चरण ॥  
नोलाचलवासी यत महाप्रभुर गण ।  
भूमिते पड़िया बन्दों सवार चरण ॥  
नवद्वीपवासी यत महाप्रभुर भक्त ।  
सवार चरण बन्दों दब्बा अनुरक्त ॥  
महाप्रभुर भक्त यत गौड़देशे स्थिति ।  
सवार चरण बन्दों करिया प्रणति ॥  
ये देशे ये देशे वैसे गौराङ्गेर गण ।  
उर्द्धबाहु करि बन्दों सवार चरण ॥  
हब्बाछेन हवेन प्रभुर यत दास ।  
सवार चरण बन्दों दन्ते करि घास ॥  
ब्रह्माण्ड तारिते शक्ति धरे जने जने ।  
ए वेद पुराणे गुण गाय येवा शुने ।  
महाप्रभुर गण सब पतित—पावन ।  
ताइ लोभे मुझि पापी लइनु शरण ॥  
बन्दना करिते मुझि कत शक्ति धरि ।  
तमोबुद्धि-दोषे मुझि दम्भ मात्र करि ॥

तथापि मूँकेर भाग्य मनेर उल्लास ।  
दोष क्षमि मो अधमे कर निज—दाम ॥  
सव्येबाञ्छा—सिद्धि हय यमबन्ध छुटे ।  
जगते दुर्लभ हवा प्रेमधन लुटे ॥  
मनेर बामना पूर्ण अचिराते हय ।  
देवकीनन्दन दास एइ लोभे कथ ॥ १ ॥

इति श्रील देवकीनन्दन-दास-विरचित श्रीश्रीवैष्णवशरण सभात ।

## श्रीश्रीगौरगणोद्देश ।

गौरगण ।

स्वरूपनिर्णय ।

उपेन्द्रमिश्र (महाप्रभु के पितामह) ... पजन्य (श्रीकृष्ण के पितामह)  
नीलाम्बरचक्रवर्ती (मातामह) ... गर्गमुनि और सुमुख (मातामह)  
जगन्नाथमिश्र (पिता) ... नन्द (श्रीकृष्ण के पिता) ।  
शर्चीदेवी (माता) ... यशोदा (माता) ।  
ईश्वरपुरी (दीक्षागुरु) ... सान्दीपनिमुनि ।  
केशवभारती (संन्यास गुरु) ... अक्रूर ।  
गङ्गादामपरिणत (विद्यागुरु) ... ब्रह्मपुत्र ।  
सुकुन्द बा  
हाड़ा परिणत } (नित्यानन्द के पिता) वसुदेव (रामकृष्ण के पिता)  
पद्मावती (माता) ... रोहिणी (वलराम की माता)  
वलभाचार्य (लक्ष्मीदेवी के पिता) ... भीष्मक (रुक्मिणी के पिता)  
सनातनमिश्र (विष्णुप्रिया के पिता) ... सत्राजितराजा (सत्यभामा के पिता)  
वनमाली (लक्ष्मी का विवाह घटक) ... विश्वामित्र ऋषि ।  
काशीनाथ (विष्णुप्रिया वि. घटक) कुलक (सत्यभामा के विवाह घटक)  
पुरंदरीकाविद्यानिधि ... वृषभानुराजा ।

गौरगण ।

स्वरूपनिर्णय ।

सूर्यदास (वसुधा तथा जाह्नवा के पिता) ... ककुप्ति (रेवती के पिता) ।  
नित्यानन्दप्रभु ... वलराम ।  
वसुधा (नित्यानन्द की पत्नी) ... बारुणी (वलराम की पत्नी) ।  
जाह्नवा ( " " ) ... अनङ्गमञ्जरी तथा रेवती ।  
वीरचन्द्र (नित्यानन्दप्रभु के पुत्र) ... पयोद्विषायी ।  
गङ्गा ( " की कन्या ) ... गङ्गा (विष्णुवादोद्भवा) ।  
माधवाचार्य (गङ्गा के स्वामी) ... शान्तनुराजा (गङ्गास्वामी) ।  
मोतकेतन रामदास ... सङ्कर्षण के आदिव्यूह ।  
श्रीशङ्खताचार्य ... सदाशिव ।  
सीतादेवी (श्रीशङ्खत की पत्नी) ... योगमाया-भगवती ।  
नन्दिनी (सीता की दासी) ... जया (भगवती की दासी) ।  
जङ्गली ( " " ) ... विजया ( " " ) ।  
अच्युतानन्द (शङ्खतप्रभु के पुत्र) ... अच्युता गोपी ।  
कृष्णमिश्र ( " " ) ... कार्तिकेय ।  
श्रीगदाधर परिणत ... श्रीराधारानी ।  
श्रीवास परिणत ... श्रीनारद ।  
मालिनी (श्रीवास की पत्नी) ... अम्बिका (श्रीकृष्ण की धात्रीमाता) ।  
नारायणी ( " भ्रातृकन्या ) ... किलिम्बिका ।  
लक्ष्मीप्रिया (महाप्रभु की पत्नी) ... रुक्मिणी (श्रीकृष्ण की पत्नी) ।  
विष्णुप्रिया ( " दूसरी पत्नी) ... सत्यभामा " " ) ।  
नरहरि सरकारठाकुर ... मधुमती ।  
रघुनन्दन (खण्डवासी) ... प्रद्युम्न ।  
वक्रेश्वरपरिणत ... अनिरुद्ध ।

गौरगण ।

स्वरूपनिर्याय ।

गदाधरदास	... पूर्णानन्दा ( बलरामप्रिया गोपी ) ।
गोपीनाथचार्य	... ब्रह्मा ।
मुरारिगुप्त	... हनुमान् ।
पुरन्दर परिडत	... अङ्गद ।
गोविन्दानन्द	... सुग्रीव ।
रामचन्द्रपुरी	... विभोषण और जटिला ।
हरिदास ठाकुर	... प्रह्लाद और ऋचिक मुनि के पुत्र ब्रह्मा ।
देवानन्द परिडत ( कुलियातिवासो )	... भागुरीमुनि ।
बृन्दावत दास	... वेदव्यास ।
वल्लभभट्ट	... शुकदेव ।
चन्द्रशेखर सरखेल	... चन्द्र ।
विश्वेश्वराचार्य	... सूर्य ।
वनमाली भिक्षुक	... सुदामा विप्र ।
शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी	... प्रधाना यज्ञपत्नी ।
जगन्नाथचार्य	... दुर्वासा ।
जगन्नाथ ( जगाइ )	... जय ( वैकुण्ठ के द्वारपाल ) ।
माधव ( माधाइ )	... विजय ( " " ) ।
गरुड़ परिडत	... गरुड़ ( विष्णुवाहन ) ।
प्रतापरुद्र	... इन्द्रद्युम्न ।
परमानन्दपुरी	... उद्धव ।
सार्वभौम भट्टाचार्य	... बृहस्पति ( देवगुरु ) ।
भास्कर ठाकुर	... विश्वकर्मा ।
काशीश्वर ( महाप्रभुभृत्य )	... भृङ्गार ( श्रीकृष्णभृत्य ) ।
गोविन्द	... भङ्गूर ( " " )

गौरगण

स्वरूपनिर्याय ।

हरिदास ( महाप्रभुभृत्य )	... रक्तरु ( कृष्णभृत्य )
वृहच्छिशु	... पन्नक ( " " )
रामध्व	... पयोद ( ब्रज में जलतंस्कारकारी ) ।
नन्दाइ	... वारिद ( " " )
ईशान दास	... शारिङ्गहृत्मुनि ।
गौरीदास कीर्तनीया	... कलकण्ठी ( ब्रज में गायक ) ।
वनमाली परिडत	... मालाधर ( ब्रज में वेणु तथा मुरलीधारक ) ।
लोकनाथ	... सनक ।
श्रीनाथ	... सनातन ।
रामनाथ	... सनत्कुमार ।
काशीनाथ	... सनन्दन ।
रायभवानन्द	... पारङ्गुमहाराज ।
वाणीनाथ ( भवानन्द के पुत्र )	... युधिष्ठिर ।
कलानिधि	... भीम ।
राय रामानन्द	{ ... ऋजुन तथा यज्जु तोयागोरी । विशाखा ( मतान्तर में ) ।
सुधानिधि	... नकुल ।
गोपीनाथ	... सहदेव ।
सेन शिवानन्द	... विद्या ( मतान्तर में वीराद्वती ) ।
मालती ( शिवानन्द की पत्नी )	... विन्दुमती ।
चैतन्यदास ( शिवानन्द के पुत्र )	... दक्ष ( ब्रज में शुकपक्षी ) ।
रामदास	... विचक्षण ( " " ) ।

गौरगण ।	स्वरूपनिर्याय ।
कविकर्णपूर ( शिवानन्द के पुत्र )	{ —मधुरेक्षण (मतान्तर में गुणचूड़ासखी) —तथा सूक्ष्मधी ( ब्रज की सारी ) ।
सत्यानन्द सरस्वती	—गीतम ।
श्रीकान्त सेन	—कात्यायनी ठाकुरानी ।
उद्धवदास	—पद्मा ।
वंशीदास ठाकुर	—श्रीकृष्ण की वंशी ।
जगदानन्द परिडत	—सत्यभामाप्रकाशविशेष ।
कृष्णदास कविराजगोस्वामी	—कस्तूरीमञ्जरी ।
सारङ्गठाकुर	—नाम्दीमुखी ।
सत्यराजखान	—सुकण्ठी ।
मुकुन्द ( खण्डवासी )	—वृन्दादेवी ।
भगवानाचार्य	—रत्नावली ।
द्विजहरिदास	—श्याममञ्जरी ।
वाणीनाथपरिडत	—कलभाषिणी ।
नवाइ होड़	—नीलकांति सखी ।
कृष्णदास सरखेल	—सम्नोहिनी सखी ।
विहारी कृष्णदास	—विच्युलता सखी ।
होड़हरिदास	—रत्नावली सखी ।
श्रीनाथ परिडत	—चित्राङ्गी सखी ।
गालिम जगन्नाथ	—सुखपाली सखी ।
पुरुषोत्तम ब्रह्मचारी	—श्रीह्लादिनी सखी ।
प्रद्युम्न मिश्र	—मधुमङ्गल ।
गोपालगुरु	—सुमुखी गोपी ।

गौरगण ।	स्वरूपनिर्याय ।
राघव ( भालिवाहक )	—मालाधर ( ब्रज का भृत्य ) ।
दमयन्ती ( राघव की भगनी )	—गुणमाला ( ब्रज का दासी ) ।
राघवपरिडत ( पानिहाटी निवासी )	—धनिष्ठा ।
जगदीश ( नृत्यविनोदी )	—चन्द्रहास ( ब्रज का नट ) ।
शङ्करघोष ( डम्फवादक )	—सुधाकर ( ब्रज में मृदङ्गवादक ) ।
वैद्यविष्णुदास	—सारदा ( ब्रज में गायक ) ।
बुद्धिमन्तखान	—मधुव्रत ( ब्रज का भृत्य ) ।
जगदीशपरिडत ( यसोड़ा निवासी )	—चन्द्रलतिकासखी ।
काशीश्वरगोस्वामी	—शशिरेखा ।
माधवीदासी	—कलाकेली ।
जगदीश तथा हिरण्यक	—दोनों जन यज्ञ पत्नी ।
भागवताचार्य	—श्वेतमञ्जरी ।

## द्वादश गोपाल ।

अभिरामठाकुर	—श्रीदाम ।
सुन्दरानन्दठाकुर	—सुदाम ।
धनञ्जयपरिडत	—वसुदाम ।
गौरीदासपरिडत	—सुवल ।
कमलाकरपिप्पलाइ	—महाधल ।
सद्धारणदत्त	—सुबाहु ।
महेशपरिडत	—महाबाहु ।
पुरुषोत्तमदासठाकुर	—स्तोककृष्ण ।
नागर पुरुषोत्तम	—दाम ।
परमेश्वरदासठाकुर	—अञ्जुन ।

## स्वरूपनिर्याय ।

गौरगण ।	
कालाकृष्णदास	—लवङ्ग ।
श्रीधरपरिणत	—कुसुमासव ।
हृलायुवपरिणत	—प्रबल ( ब्रज में सखा ) ।
रुद्रपरिणत	—वरूथप ”
कुमुदानन्दपरिणत	—गन्धर्व ”
काशीश्वरपरिणत	—किङ्किणी ”
वनमालीप्रोभा	—अंशुमान् ”
समृद्धाकुर	—भद्रसेन ”
मुरारिमाहाति	—वसन्त ”
गङ्गादास	—उज्ज्वल ”
गोपालठाकुर	—कोकिल ”
शिवाइ	—विलासो ”
नन्दाइ	—पुण्डरीक ”
विष्णाइठाकुर	—कनविद्ध ”

## अष्टगोस्वामी ।

धोरूपगोस्वामी	—रूपमञ्जरी ।
श्रीसनातनगोस्वामी	—लवङ्गमञ्जरी ।
श्रीरघुनाथभट्टगोस्वामी	—रसमञ्जरी ।
श्रीजीवगोस्वामी	—विलासमञ्जरी ।
श्रीगोपालभट्टगोस्वामी	—गुणमञ्जरी ।
श्रीरघुनाथदासगोस्वामी	—रतिमञ्जरी ।
श्रीलोकनाथगोस्वामी	—मञ्जुलालीमञ्जरी ।
श्रीभूगर्भगोस्वामी	—प्रेममञ्जरी ।

प्रष्टसिद्धिः—अनन्तपुरी, कृष्णानन्दपुरी, सुखानन्दपुरी, गोविन्द-  
पुरी, रघुनाथपुरी, केशवपुरी, दामोदरपुरी, राघवपुरी ॥  
क्रमतः—अणिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व,  
वशित्व, कामावसायित्व ॥  
नवनिधिः—श्रीनिधि, श्रीगर्भं, कविरत्न, सुधानिधि, विद्यानिधि,  
गुणनिधि, रत्नबाहु, प्राचार्यरत्न, रत्नाकरपरिणत ॥  
क्रमतः—पक्ष, महापक्ष, शङ्ख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुम्भ,  
नील, खर्व ॥  
नवजयन्तपुत्रः—नृसिंहानन्दतार्थ, सत्यानन्दतीर्थ, चिदानन्दतीर्थ,  
जगन्नाथतीर्थ, वासुदेवतीर्थ, श्रीरामतीर्थ, गरुडअवधूत, गोपेन्द्र-  
आश्रम ॥  
क्रमतः—जयन्त के नै पुत्र ॥

## अष्ट प्रधान महन्तः—

गौरगण—		ब्रजपरिकरः—
स्वरूपदामोदर	—	ललिता ।
रायरामानन्द	—	विशाखा ।
सेनशिवानन्द	—	चित्रा ।
रामानन्दवसु	—	चम्पकलता ।
माधवघोष	—	तुंगविद्या ।
गोविन्दानन्दठाकुर	—	इन्दुरेखा ।
गोविन्दघोष	—	रंगदेवी ।
वासुदेवघोष	—	सुदेवी ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



चौपठ महन्त की भोगमाला:—

पञ्चतत्त्व:—श्रीमन्महाप्रभु, श्रीनित्यानन्दप्रभु, श्रीअद्वैतप्रभु, श्री-  
गदाधरपण्डित तथा श्रीवासपण्डित ॥ (पूर्वाभिमुख में)

पञ्चतत्त्व की बाई ओर दक्षिणाभिमुख में—

गुरुवर्ग की यथा—माधवेन्द्रपुरी, ईश्वरपुरी, परमानन्दपुरी, विष्णु-  
पुरी, रघुनाथपुरी, कृष्णानन्दपुरी, नृसिंहानन्दपुरी, सुखानन्दपुरी,  
अनन्तपुरी, रामचन्द्रपुरी ॥

गुरुवर्ग के वामभाग दक्षिण मुख में—

भारतीगोस्वामियों कीयथा—केशवभारती, ब्रह्मानन्दभारती,  
वलरामभारती, रामानन्दभारती, वल्लभभारती, यदुनन्दनभारती,  
श्यामानन्दभारती ॥

पञ्चतत्त्व के वाम भाग पूर्वाभिमुख में—

द्वादश गोपालों की यथा—अभिरामठाकुर, सुन्दरानन्दठाकुर, घन-  
ञ्जयपण्डित, गौरीदासपण्डित, कमलाकरपिप्पलाई, उद्धारणदत्त,  
महेशपण्डित, पुरुषोत्तमदास, नागरपुरुषोत्तम, परमेश्वरदास,  
कालाकृष्णदास, खोलावेचा श्रीधरपण्डित ॥

भारतीगोस्वामियों की बाई ओर पूर्वाभिमुख में—

अष्टप्रधान महन्त—स्वरूपदामोदर, रायरामानन्द, सेनशिवानन्द,  
रामानन्दवसु, माधवघोष, गोविन्दानन्दठाकुर, गोविन्दघोष, वासु-  
देवघोष ॥

अष्टप्रधान महन्त की बाई ओर पूर्वमुख में प्रत्येक के आठ आठ  
कर के कुल चौपठ—

स्वरूपदामोदरगोस्वामी के आठ पार्षद:—

चन्द्रसेखर आचार्य, रत्नगर्भठाकुर, गोविन्द, गरुड़, मुकुन्ददत्त,

दामोदरपण्डित, कृष्णदासठाकुर, कृष्णानन्दठाकुर ।

ब्रजलीला में—(क्रमतः) रत्नप्रभा, रतिकला, सुभद्रा, भद्र-  
रेखिका, सुमुखी, धनिष्ठा, कलहंसी, कलापिनी ॥

इनकी बाई ओर रामानन्दराय के आठ पार्षद:—

माधवाचार्य, नीलाम्बुठाकुर, रामचन्द्रदत्त, वासुदेवदत्त, नन्दना-  
चार्य, शंकरठाकुर, सुदर्शनठाकुर, सुबुद्धिमिश्र ॥

ब्रजलीला में—(क्रमतः) माधवी, मालती, चन्द्ररेखिका, कुञ्जरी,  
हरिणी, चपला, सुरभी, शुभानना ॥

इनकी बाई ओर शिवानन्दसेन के आठ पार्षद:—

श्रीरामपण्डित, जगन्नाथदास, जगदोशपण्डित, मदाशिवकवि-  
राज, रायमुकुन्द, मुकुन्दानन्द, पुरन्दराचार्य, नारायण-  
वाचस्पति ॥

ब्रजलीला में—(क्रमतः) रसालिका, तिलकिनी, शौरसेनी,  
सुगन्धिका, कामिला, कामनागरी, नागरी, नागवेलिका ॥

इनकी बाई ओर वसुरामानन्द के आठ पार्षद:—

मधुपण्डित, मकरध्वजकर, द्विजरघुनाथ, विष्णुदास, पुरन्दर-  
मिश्र, गोविन्दाचार्य, परमानन्दगुप्त, वलरामदास ॥

ब्रजलीला में—(क्रमतः) कुरंगाक्षी, सुचरिता, मण्डली, मणि-  
कुण्डला, चन्द्रिका, चन्द्रलतिका, कन्दुकाक्षी, सुमन्दिरा ॥

इन की बाई ओर गोविन्दघोष के आठ पार्षद:—

काशीगिरि, शिखिमाहाति, कालिदास, श्रीमान् पण्डित, कवि-  
चन्द्रठाकुर, हिरण्यगर्भ, जगन्नाथसेन, द्विजपीताम्बर ॥

ब्रजलीला में ये (क्रमतः)—कलकंठी, शशिकला, कमला, मधु-  
रेन्दिरा, कन्दर्पसुन्दरी, कामलतिका, प्रेममञ्जरी ॥

इनकी बाई ओर वासुदेवघोष के आठ पार्षद:—

राघवपण्डित, रुद्रपण्डित, मकरध्वजपण्डित, कंसारिसेन,

जीवपरिहृत, मुकुन्दकविराज, छोटे हरिदास तथा कविचन्द्र-  
माचार्य ॥

ब्रजलीला में ये (क्रमतः) कावेरी, चारुद्वारा, सुवेशो, मंजु-  
केशिका, हारहीरा, महाहीरा, हारकंठो, मनोहरा ॥

इन की बाईं ओर माधवघोष के आठ पार्श्वद—

मकरध्वजसेन, विद्यादाचस्पति, गोविन्दठाकुर, कविकर्णपूर,  
श्रीकान्ठाकुर, माधवपरिहृत, प्रबोधानन्दरारस्वती तथा वल-  
भद्रभट्टाचार्य ॥

ब्रजलीला में क्रमतः ये—

मंजुमेघा, सुधुरा, सुमध्या, मधुरेक्षणा, तनुमध्या, मधुस्यन्ता,  
गुणचूड़ा तथा वराङ्गदा ॥

इन की बाईं ओर गोविन्दानन्दघोष के आठ पार्श्वदः—

परमानन्दगुप्त, वल्लभठाकुर, जगदीशठाकुर, वनभार्मीदास,  
श्रीनिधिपरिहृत, श्रीकरपरिहृत, लक्षणाचार्य तथा पुष्पोत्तम-  
परिहृत ॥

ब्रजलीला में क्रमतः ये—तुङ्गविद्या, रसतुङ्गा, रंगवाटी, सुम-  
ङ्गला, विग्ररेखा, विचित्रांगो, मोदनी तथा मदनालसा ॥

द्वादश गोपाल की बाईं ओर पूर्वाभिमुख में अष्ट गोस्वामी  
की भोग—

ग्रोरूप, सनातन, रघुनाथभट्ट, रघुनाथदास, गोपालभट्ट, श्री-  
जीव, लोकनाथ तथा भूगर्भगोस्वामी ॥

ब्रजलीला में क्रमतः यथा—

रूपमञ्जरी, लवंगमञ्जरी, रसमञ्जरी, रतिमञ्जरी, गुणमञ्जरी,  
विलासमञ्जरी, मंजुलालीमञ्जरी (नामान्तर लीलामञ्जरी)  
तथा प्रेममञ्जरी ॥

इन के बाद छे चक्रवर्ती, तथा अष्ट कविराज की भोग—

चक्रवर्तीगण प्रभु के सम्मुख पश्चिमाभिमुख में तथा कविराज-  
गण चक्रवर्तिगण के वामभाग में पश्चिमाभिमुख में बैठेंगे ॥

छे चक्रवर्ती—

श्रीयास, गोकुलानन्द, श्यामदाम, श्रीदास, गोविन्द तथा  
रामचरणचक्रवर्ती ॥

अष्ट कविराजः—

रामचन्द्र, गोविन्द, कर्णपूर, नृसिंह, भगवान्, वल्लभदास,  
गोकुल तथा गोपोरमणकविराज ॥

छे चक्रवर्ती तथा अष्ट कविराज ये सब श्रीनिवासाचार्यप्रभु  
के शिष्य हैं ।

पञ्चतत्त्व के दक्षिण-उत्तरमुख में पितृवर्ग की भोगमाला—

पितृवर्ग यथा—कुवेराचार्य, जगन्नाथमिश्र, तथा हाड़ा-  
परिहृत ॥

पञ्चतत्त्व की बाईं ओर दक्षिणमुख में मातृवर्ग की भोग—

मातृवर्ग यथा—नामादेवी, शचीमाता तथा पद्मावती ॥

मातृवर्ग की बाईं ओर दक्षिणमुख में प्रियावर्ग का पङ्क्त—

प्रियावर्ग यथा—सीताठाकुरानी, श्रीठाकुरानी, विष्णुप्रिया,  
लक्ष्मीप्रिया, वसुधादेवी तथा जाम्बवाठाकुरानी ॥

छे चक्रवर्ती के दक्षिण-पश्चिममुख में सन्तानगण का पङ्क्त—

सन्तानगण यथा—वीरचन्द्रगोस्वामी, रामाई, नन्दाई, मीन-  
केतन, रामदास, अच्युतानन्द, कृष्णमिश्र, बलराममिश्र,  
गोपालदास, जगदीश, नन्दिनी, जङ्गली, नरहरिसरकारठाकुर,  
मुकुन्द, रघुनन्दन, चिरञ्जीव तथा सुलोचन ॥

चौसठ महन्त के बाईं ओर पूर्वमुख में ठाकुरगण का पंगत-  
ठाकुरगणप्रथा-नरोत्तम, श्रीनिवासाचार्य प्रभु तथा क्षीरधामाकन्द  
ठाकुर' ॥

निवेदक ग्रन्थे सम्प्रदाय के महाजनों के सिद्धान्तानुसार गुरु-  
वर एव गुरुस्थानीय पापदण्ड का कृष्णनिबोधित वस्तु द्वारा तथा  
अवशिष्ट पार्वती को पंचतत्त्वनिबोधित वस्तु द्वारा भोग करावे ॥

इति भोगमाला-समाप्त



॥ श्री गौराङ्गविधुर्जयति ॥

❀ श्री कृष्णचैतन्यदेवो जयति ❀

❀-॥ प्रणामविधायकस्त्रोतम् ॥-❀



श्री मदगुरुन्प्रपद्येऽहं वाञ्छाकल्पतरुन्प्रभून् ।

येषां कृपाञ्जलेनापि नेत्रं याति प्रकाशिताम् ॥ १ ॥

श्री कृष्णचैतन्य कृपाम्बुराशे,

संसारसिन्धौ पतिते मयि त्वम् ॥

कामादि-नक्र-मसितेऽतिदाने,

द्राग्दीनबन्धो करुणां विधेहि ॥ २ ॥

श्रीश्रीमत्कृष्णचैतन्यं वन्देऽहं करुणार्णवम् ।

जीवेभ्यः कृपया गुप्तां प्रेम-भक्तिं ददाति यः ॥ ३ ॥

यस्य प्रेम - प्रभावैरतिशयकरुणः श्रीलगोपालदेवः

प्राक्छ्यं प्राप्य लोकान्मदयति सततं भक्तवात्सल्यमूर्तिः ।

गोपीनाथश्च यस्य प्रणयवशमगात् क्षीरचोराभिधानः

तं श्रीमन्माधवेन्द्रं निरवधि शिरसा नमि सानन्दचित्ताम् ॥ ४ ॥

कृपारसनिधिं वन्दे श्रीनित्यानन्दमीश्वरम् ।

चत्कारुण्यकणेनापि विश्वं याति कृतार्थताम् ॥ ५ ॥

श्रीनित्यानन्दचन्द्रः पतितततिगतिः पूर्णकारुण्ययुक्तः

श्रीमच्चैतन्यचन्द्रप्रियतमसुखदो जीव - निस्तारकारी ।

( २ )

यत्कारुण्यप्रभावाद्भुवनजनगणो भक्तिमासाद्य गूढां  
गायत्युच्चैः प्रमत्ताः स तु मम शरणं दुर्गतेः जीवनञ्च ॥६॥  
श्रीकृष्णचैतन्यगणाग्रगण्यं, भक्तिप्रवर्त्ताय कृतावतारम् ।  
दीनैकबन्धुं महितं जगत्यामद्वैतचन्द्रं शिरसा नमामि ॥७॥  
श्रीमदद्वैतचन्द्रं तं वन्देऽहं जगतां गुरुम् ।  
येनाराधनहुंकारैश्चैतन्यः प्रवटीकृतः ॥ ८ ॥  
तं वन्दे सततं भक्त्या पण्डितं श्रीलगदाधरम् ।  
यस्य केवलजीवाद्ः श्रीचैतन्यमहाप्रभुः ॥ ९ ॥  
श्रीचैतन्यप्रियतमं वन्दे श्रीवासपण्डितम् ।  
यत्कारुण्यकटाक्षेण श्रीगौराङ्गे रतिर्भवेत् ॥ १० ॥  
वन्दे श्रीहरिदासं तं श्रीमच्चैतन्यजीवनम् ।  
श्री कृष्ण नाम-महिमा-लोके येन प्रकाशितः ॥ ११ ॥  
दामोदरमहं वन्दे गौराङ्गप्रियपार्षदम् ।  
येन श्रीकृष्णचैतन्यवाक्यदण्डेन तोषितः ॥ १२ ॥  
पण्डितं जगदानन्दं वन्दे प्रेमपरिप्लुतम् ।  
यः स्नेहेन वशीकृत्य गौरमन्नमभोजयत् ॥ १३ ॥  
श्री मद्वक्त्रेश्वरं वन्दे पण्डितं करुणामयम् ।  
श्रीचैतन्यप्रियतमं नृत्योत्सवमहाद्भुतम् ॥ १४ ॥  
श्रीमद्विष्णुपुरी वन्दे श्रीमद्भागवताम्बुधेः ।  
श्रीविष्णुभक्तिरत्नानां माला येन प्रकाशिता ॥ १५ ॥  
श्री श्रीश्वरपुरी वन्दे सदा प्रेम-परिप्लुतम् ।  
वन्दे श्रीपरमानन्दपुरी गम्भीरमानसम् ॥ १६ ॥  
मार्कण्डेयमहं वन्दे भट्टाचार्यमहाशयम् ।  
श्रीचैतन्यकृपापात्रं सर्वशास्त्रार्थपारगम् ॥ १७ ॥  
श्री मत्काशीश्वरं वन्दे श्रीगोविन्दमहामतिम् ।  
यत्प्रेम-सेवया नित्यं श्रीगौराङ्गसुखं व्रजेत् ॥ १८ ॥

( ३ )

श्रीमत्स्वरूपस्य पदाब्जधूनि वन्दामहे नित्यमतिप्रयत्नैः ।  
देहो द्वितीयश्च महाप्रभो र्योऽप्यत्यन्तगम्भीरमतिर्दयाधिः ॥१९॥  
यः श्रीयुतस्वरूपः सकलगुणस्त्रिस्तप्तेषामङ्गकान्तिः  
श्रीमच्चैतन्यचन्द्रप्रियतमपरमः प्रेमपूर्णप्रतीकः ।  
श्रीराधाकृष्णलीलारतिरसरचनागानशास्त्रार्थविज्ञो  
वन्दे तस्यादिघ्नपद्मं मधुरमधुरं मञ्जुलामोदचित्तम् ॥२०॥  
यो रामानन्दरायो गुणनिधिरसिकः कृष्णचैतन्यभक्तः  
श्री राधाकृष्णलीलामृतमधुररसप्रेममाध्वीक्रमत्तः ।  
गम्भीरश्चातिधीरो गुणगणचतुरो लोकरस्यस्वभावो  
वन्दे तत्पादपद्मं निरबधि सुखदं नित्यमानन्दरूपम् ॥२१॥  
श्री विद्यानिधिनामकं निरुपमं वन्दे प्रपन्नो मुदा  
सर्वानन्दकदम्बनन्दतनुजे प्रेम - प्रमत्ताकृतिम् ।  
श्रीचैतन्यमहाप्रभोः प्रियतमं गाम्भीर्यवन्तं सदा  
यस्य स्नेहरसो भवन् गुणनिधी रौतिस्म गौरोहरिः ॥ २२ ॥  
श्रीलाभिरामो जगति प्रसिद्धो,  
यः सख्यभावामृतसिन्धुमग्नः ।

प्रेम प्रमत्तो विदिताद्भुतेहा

तस्यादिघ्न-युग्मं सततं नमामि ॥ २३ ॥  
पण्डितं जगदीशं तं वन्दे नित्यविनोदिनम् ।  
यदाश्रयेन लोकानां चैतन्ये जायते रतिः ॥ २४ ॥  
मुरारिं वासुदेवञ्च श्रीधरं विजयं तथा ।  
श्री चैतन्यप्रियान् वन्दे श्रीनवद्वीपवासिनः ॥ २५ ॥  
श्री मुकन्दं सदा वन्दे श्रीमन्नरहरिं तथा ।  
श्री रघुनन्दनं वन्दे सर्वान् श्रीखण्डवासिनः ॥ २६ ॥  
नारायणीसुतं वन्दे दासवृन्दावनाभिधम् ।  
चैतन्यचन्द्रचरितै र्येनैवोद्धारितं जगत् ॥ २७ ॥

( ४ )

रामानन्दस्वरूपञ्च भीवासं हरिदासकम् ।  
 श्री चैतन्यप्रियतमान्सर्वान् वन्दे कृताञ्जलिः ॥ २८ ॥  
 श्री कृष्णचैतन्यपदारविद-  
 माध्वीकपानेन सदैव मत्सम् ।  
 वन्दामहे श्रीयुतकर्णपूरं  
 प्रीत्या वयं नित्यमतिविनम्राः ॥ २९ ॥  
 चैतन्यपादाब्जमरन्दलुब्धो,  
 गांधर्विकाकृष्णगुणैः प्रमत्ताः ।  
 श्रीमूर्तितीर्थादिप्रचारकर्ता,  
 वन्द्यः सदा श्रीलसनातनो मे ॥ ३० ॥  
 यत्पादपङ्कजरजः शिरसा प्रणम्य  
 धन्या भवन्ति नितरां बहवो जगत्याम् ।  
 श्रीमत्सनातनतनुः सदयार्द्रचित्तो  
 मन्दस्य मेऽप्यनुदिनं शरणं स एव ॥ ३१ ॥  
 सनातनं प्रभुं वन्दे दीनदुःखेन दुःखितम् ।  
 यत्कृपालेशमात्रेण पामरोऽप्युत्तमो भवेत् ॥ ३२ ॥  
 श्रीरूपपादरेणुर्मे केवलं जीवनौषधम् ।  
 निपत्य भूमौ तं वन्दे यतः पूर्णमतोरथः ॥ ३३ ॥  
 श्रीमद्रूपपादाम्भोजधूलिं वन्दे निरन्तरम् ।  
 दशनैः कृष्णमादाय भूयो भूयः कृताञ्जलिः ॥ ३४ ॥  
 श्रीरूपस्य पदारविदयुगलं मूढना निपत्य क्षितौ  
 वन्दे नित्यमहं शरण्यमतुलं सर्वाभिलाषप्रदम् ।  
 श्रीचैतन्यकृपासुधाजलनिधौ मग्नस्य येनैह वै  
 राधाकृष्णनिगूढभक्तिविततिः प्रेम्णा प्रकाशीकृतः ॥ ३५ ॥  
 श्रीरूपस्याङ्घ्रिपद्मं प्रणतगतिमहं नौमि भूमौ निपत्य  
 श्रीराधाकृष्णलीलामृतसलिलनिधौ मज्जितो येन लोकः ।

( ५ )

श्रीमच्चैतन्यचन्द्रोऽतिशयकृपया यत्र शक्तिं प्रकाशय  
 श्रीमद्वृन्दावनीयं मधुररतिरसं दर्शयामास सर्वान् ॥ ३६ ॥  
 संसारकूपपतिते मयि दुष्टघुद्धौ,  
 कामादिसत्कट्टदये करुणार्द्रचित्तः ।  
 दुर्वासनाहिंगिलिते शरणं त्वमेव,  
 श्रीरूप दुर्गतजने करुणां विधेहि ॥ ३७ ॥  
 श्रीचैतन्यकृपासुधाब्धिलहरीसिक्तं गम्भीरं गुणैः  
 श्रीरूपप्रणयप्रमोदसरसीभङ्गादितस्वान्तकम् ।  
 श्रीवृन्दाबिपिनेश्वरीगिरिभृतो लीलामृतास्वादकं  
 तं श्रीमद्रघुनाथभट्टमनिशं वन्दे प्रमोदान्वितम् ॥ ३८ ॥  
 तं भट्टरघुनाथाख्यं वन्दे भागवतीयकम् ।  
 श्रीचैतन्यप्रियतमं शरणागतपालकम् ॥ ३९ ॥  
 श्रीकृष्णचैतन्यकृपाभिसिक्तं, श्रीरूपमख्यामृतपूर्णचित्तम् ।  
 श्रीराधिकाकृष्णसुखाब्धिमग्नं, गोपालभट्टं प्रभुमाश्रयामि ॥ ४० ॥  
 श्रीमद् गोपालभट्टप्रभुवरकरुणासागरो दीनबन्धो  
 स्तस्य श्रीपादपद्मं नतजनशरणं सर्वदाहं नमामि ।  
 श्रीमच्चैतन्यदेवः परमसदयधीः सान्द्रकारुण्ययुक्तः  
 श्रीराधाकृष्णपादाम्बुजपरिचरणं, शिष्यामास यस्मै ॥ ४१ ॥  
 श्रीदासरघुनाथाख्यं वन्दे दीनैकबान्धवम् ।  
 बासो नियमितो येन राधाकुण्डतटे सदा ॥ ४२ ॥  
 श्रीकृष्णचैतन्यकृपैकपात्रं श्रीराधिकाकृष्णपदाब्जभृङ्गम् ।  
 तेषाञ्च प्रेमासृतसिन्धुमग्नं, वन्दे सदा श्रीरघुनाथदासम् ॥ ४३ ॥  
 श्रीचैतन्यकृपासुधामयनदीबीचीभिरासिञ्चितः  
 श्रीमद्रूपसनातनप्रियतमश्रीजीववात्सल्यवान् ।  
 श्रीराधासरसीतटे विनिवसन् नामामृतानन्दितो  
 यस्तं श्रीरघुनाथदासमनिशं वन्दे कृपासागरम् ॥ ४४ ॥



बन्दे श्रीलोकनाथं तं श्रीमच्चैतन्यवल्लभम् ।  
 दयालुं करुणापूर्णं दीनानुग्रहकातरम् ॥ ४५ ॥  
 यः श्रीमान्लोकनाथः सकलगुणनिधिः भावगम्भीरचित्तः  
 श्रीमच्चैतन्यचन्द्रे विमलविनयधीर्नाममाध्वोक्तभृङ्गः ।  
 श्रीमद् वृन्दाबनेशा-व्रजपतितनय-प्रेमपीयूषमत्तो  
 बन्दे तस्याङ्गिप्रपन्नं सततमनुपमं मोदरोमाञ्चिताङ्गः ॥ ४६ ॥  
 दर्शितार्थो जनेभ्यश्च श्रीमद्भागवतस्य यः ।  
 तं नमामि सदैव श्रीजीवगोस्वामिनं प्रभुम् ॥ ४७ ॥  
 श्रीमज्जीवः सद्यहृदयो लोकदुर्गेभ्यभावो  
 भक्तेस्तत्त्वं परममनुलं सर्वशास्त्रे निगूढम् ।  
 कृष्णस्यापि प्रचुरचरितं यश्चकार प्रकाशं  
 तस्य श्रीमच्चरणयुगलं नौमि नित्यं प्रपन्नाः ॥ ४८ ॥  
 श्रीजीवस्य पदारविन्दमनुलं बन्दामहे सर्वदा  
 वाञ्छाकल्पतरोः कृपाद्रं मनसो दीनैकबन्धो प्रभोः ।  
 श्रीमद्रूपसनातनाङ्गिप्र कमले भृङ्गायमानात्मनो  
 चेन श्रीभगवन्महत्त्वविततेः सिद्धान्त आविष्कृतः ॥ ४९ ॥  
 यः श्रीमच्छृणुदासः कविनृपतिवरः स्निग्धमुग्धस्वरूपः  
 श्रीमच्चैतन्यचन्द्रस्य चरितरचना भूरिकीर्तिर्जगत्याम् ।  
 श्रीमद् वृन्दावने श्रीवृषरवितनयाकृष्णभावाव्विसग्नो  
 बन्दे तत्पादयुग्मं सकलकुशलदं नित्यमानन्दयुक्तम् ॥ ५० ॥  
 बन्दे श्रीकृष्णदासारूप्यं कविराजं गुणालयम् ।  
 मज्जितं भुवनं येन कृष्णलीलामृताण्वे ॥ ५१ ॥  
 आचार्य श्रीनिवासारूप्यं प्रभुं बन्दे कृपामयम् ।  
 यस्यादकमलद्वन्दं गतिर्मे जन्म-जन्मनि ॥ ५२ ॥  
 आचार्य श्रीनिवासप्रभुरतिरुचिरस्तमकार्त्तस्वराभः  
 श्रीराधाकृष्णनामामृतमयजलधेरुर्मिनाकृष्टजिह्वः ।

यः श्रीवृन्दावनीयं मधुररतिरसं दर्शयामास लोकान्  
 तस्य श्रीमत्पादाब्जं मम कृपणमतेः जीवनं तद्य नौमि ॥ ५३ ॥  
 यस्य श्रीमच्चरणकमलद्वन्दमाश्रित्य मदं-  
 प्रीत्या वाञ्छास्म्यचिरतमहं कृष्णपादाब्जभक्तिम् ।  
 आचार्यः स स्फुरतु हृदये श्रीनिवासप्रभुर्मे  
 लोकान्सर्वान् य इह सद्यो भक्तियुक्तांश्चकार ॥ ५४ ॥  
 बन्दे नरोत्तमं नाम श्रीठक्कुरमहाशयम् ।  
 चन्द्रिकां प्रेमभक्तिं यश्चकार परमोज्ज्वलाम् ॥ ५५ ॥  
 कविराजं रामचन्द्रं तथा गोविन्ददासकम् ।  
 श्रीनृसिंहं घनश्यामं बन्दे सर्वान्महामतीन् ॥ ५६ ॥  
 श्यामानन्दमहं बन्दे प्रेमानन्दपरिप्लुतम् ।  
 यस्मै श्रीराधिका स्वीयां तुलाकोटिं ददौ मुदा ॥ ५७ ॥  
 बन्दे श्रीरसिकानन्दं दीनानुग्रहकातरम् ।  
 पश्वादिभ्योऽपि नामानि कृपयोपदिदेश यः ॥ ५८ ॥  
 सर्वाभिष्टप्रदान्वन्दे वैष्णवान्दीनवत्सलान् ।  
 येषां कृपालवेनापि सर्वविघ्नो विनश्यति ॥ ५९ ॥  
 सर्वेषां भक्तवृन्दानां गौरप्रेमवतां सताम् ।  
 नित्यं पादरजो बन्दे मन्दधीरात्मशुद्धये ॥ ६० ॥  
 अज्ञोऽधमोऽपराधीश्च दुष्टो दोषाकरोऽस्यहम् ।  
 क्षम्यतां सर्व-मन्तुर्मे सर्वत्र कृपयान्विताः ॥ ६१ ॥  
 यः श्रद्धया पठेदेतान् श्लोकात्रतिविधायकान् ।  
 तस्मिन् श्रीकृष्णचैतन्यः सर्वथैव प्रसीदति ॥ ६२ ॥  
 ॥ इति प्रणामविधायारव्यं स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ केनचित् प्रकटीकृतम् ॥



( ८ )

## जय जय जय जग-मङ्गलकारी

जन मनमोहन गौर कृष्ण विधु नदिया पूर धर धरज बिहारि ॥ध्रु०  
नित्यानन्दचन्द्र हलधर हर कलिकलुष विषम अन्धियारि ।  
श्रीअद्वैत परमकरुणा निधि दारुण भव दव दहने उधारि ॥  
सुखद गदाधर धरनि बिदीत सिरिबासाहि प्रेमभक्ति अधिकारि ।  
गरुड गदाधर नरहरि हरिदास स्वरूप प्रिय गुप्त - मुरारि ॥  
सार्वभौम सिरि - वासुदेव विद्यानिधि पुण्डरीक सुखकारी ।  
सिरि जगदीश विजय बक्रेश्वर दामोदर वर विपद बिदारि ॥  
रामानन्द मुकुन्द सुन्दरानन्द नयनानन्द प्रचारि ।  
श्रीनिधि प्रबोधानन्द गौरसे गरगर हृदय न रहत सम्भारि ॥  
रामानन्दराय रससागर परमानन्द गुप्त धृति धारि ।  
राघव रघुपति राम महिवर करन प्रेमधन मुदित विकारि ॥  
काशीश्वर परमेश्वर नारयण सुदर्शन नयन फल चारि ।  
रूप सनातन रघुनाथ श्रीजीव भक्ति - वर रतन उधारि ॥  
श्रीगोपालभट्ट रघुनाथ ही लोकनाथ चैतन्य - मुरारि ।  
वासुधोप माधव गोविन्द रूपेय जलधि मधि सतत सौतारि ॥  
श्रीधर परमानन्द पुरन्दर पदु गुणे निरत नयने ऋव वारि ।  
सिरि उद्धारण धनञ्जय रुञ्जय गौरदास यश विसद बिधारि ॥  
संकर रघुनन्दन महेव अभिराम शमन-भय भञ्जन कारि ॥  
श्रीयदु मधु - परिणत शुक्लाम्बर वृन्दावन वरपत रस भारि ॥  
जगदानन्द मुकुन्द गानरत पदुरस वस निशि दिवस बिसारि ।  
कर्णपूर कावलोचन जनलोचन गुणगण गायत नर नारि ॥  
सिरि श्रीनिवास नरोत्तम श्यामानन्द सख गनइ ना पारि ।  
नरहरि भण मन आस पुरह निज दास करह अति दुखित नेहारि ॥  
—गोरकृष्णभावनामृते

ॐ-ॐ-ॐ-ॐ-ॐ

## सूचना

यह साधककण्ठभूषण विशालरूपमें प्रस्तुत-करके साधकों  
के ममत्तमें उपस्थित करने का विचार है । इनमें प्रचुर धन-  
शक्ति आवश्यकता है । कुछ दिनोंसे स्वास्थ्य खराब होनेसे  
या अनेक प्रकार की अशान्तिके कारण यह कार्य तथा प्राचीन  
तात्त्विक साहित्यप्रकाशन कार्यमें काफ़ी बाधा आई है ।  
प्रागे प्रभु की जैसी इच्छा होगी वैसा होगा ।

चाचाकृष्णदास

अन्तिम चार पृष्ठ व मुखपृष्ठ गौरहरि प्रेस वृन्दावन में छपा,  
शेष कुसुमसरोवरमें छपा ।

## श्रीश्रीराधारमणो जयति

श्रीरामशिष्यं कटके सुजन्मं पौगण्डकाले गुरुसान्निधाप्तम् ।  
गौरोदयोर्व्यां परियान्तमाशु श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ॥१॥

गौराङ्गदासादिभिरुन्मदेन वृन्दावने वासकृतं सहर्षम् ।  
भावानुरागेण वदन्तमुच्चैः श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ॥२॥

गौडीयभक्तै रचिता रसाढ्या उद्दीपिता ग्रन्थवरा हि येन ।  
साहित्यरत्नं ब्रजभूषणं तं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ॥३॥

विज्ञैः समेतं सुमनःसरस्थं ग्रन्थानुलेखं परिशोधयन्तम् ।  
सद्भक्तिसिद्धान्तनिधिं सनिष्टं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ॥४॥

सौम्यं कृपालुं मधुभाषकण्ठं शुक्लाम्बरं क्षीणतनुं नितान्तम् ।  
निःसङ्गमानन्दवपुं महान्तं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ॥५॥

लीलास्मरन्तं सततं जपन्तं देवाग्र उन्मत्तपरं नटन्तम् ।  
संकीर्तनामोदमोदं प्रसिद्धं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ॥६॥

भक्ताधरोच्छिष्टललातिचित्तं स्नेहाभिमूर्तिं चलनातिधीरम्  
भक्तानभक्ताज्य नमन्तमुत्कं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ॥७॥

रोमाञ्चकम्पाश्रुतरङ्गयुक्तं मुग्धं प्रशान्तं नितरां हसन्तम् ।  
वैराग्यसिन्धुं करुणैकबन्धुं श्रीकृष्णदासं प्रणमामि नित्यम् ॥८॥

---

इति श्रीश्रीवृन्दावननिवासिना श्रीश्रीवृन्दावनदासेन विरचितं  
श्रीश्रीकृष्णदासाष्टकं सम्पूर्णम्

